नवंबर (द्वितीय) 2020 | ₹30.00

चंपक

सब्सक्राइब करने के लिए 8588843437 पर मैसेज भेजें.
या देखें delhipress.in
अगला 'ई एडिशन फ्री' पाने के लिए ऊपरी नंबर पर मैसेज भेजें.

VISIT…

HAPPIER CHILDHOODS GUARANTEED

If you are looking for magazines that will help spark the imagination of your child, look no further! Dedicated to broadening the horizons of children aged 2-12 years, *Champak*, *Highlights Genies* and *Highlights Champs* are an essential part of your child's reading list.

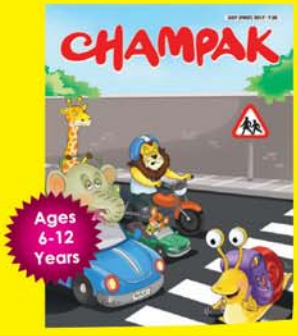

India's largest read children's magazine

America's leading children's magazine in now is India!

America's leading early childhood magazine is now in India!

To subscribe : SMS 8588843436 | Call toll free no.1800 103 8880 | visit www.delhipress.in/subscribe | email subscription@delhipress.in

चंपक

नवंबर (द्वितीय) 2020 अंक : 1201

संस्थापक
विश्वनाथ
1917–2002

सुनो कहानी

अनोखा कदम	4
कितनी बुरी	9
उपहार	14
पहाड़ी से मुलाकात	19
कुक्की की जीत	26
किमी की दोस्त	30
आलसी	37
ऐप्स का घमासान	47

मुखपृष्ठ

सर्दियों का मौसम आ रहा है. यह ऊनी स्वेटर और फजी जैकट्स का समय है. इस मौसम का यह जादुई सीजन है.

मन बहलाओ

सुंदर रंग भरो	8
देखो हंस न देना	12
बताओ तो जानें	16
अपने अधिकार जानें	18
विश्व शौचालय दिवस	23
बिंदु मिलाओ	29
चित्र पूरा करें	32
छिपे चित्र ढूंढ़ें	33
स्मार्ट	34
दिशा बताएं	36
अंतर बताओ	40
रास्ता बताओ	41
गलत को बताएं	46

चित्र कथाएं

डमरू और टूथब्रश	13
चीकू	24
दादाजी और विश्व टैलीविजन दिवस	42

विशेष पृष्ठ

मजेदार विज्ञान	17
नन्ही कलम से	44

संपादक व प्रकाशक ● परेश नाथ

संपादकीय, विज्ञापन व प्रकाशन कार्यालय :
दिल्ली प्रेस भवन, ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055. फोन : 41398888, 23529557-62.
दिल्ली प्रैस पत्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक परेश नाथ द्वारा ई-8, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055 से प्रकाशित एवं पीएस पीसी प्रैस प्राइवेट लिमिटेड, डीएलएफ-50, इंडस्ट्रियल एरिया, फरीदाबाद, हरियाणा -121003 से मुद्रित. संपादक - परेश नाथ.
Sold on the condition that jurisdiction for all disputes concerning sale, subscription and published matter will be in courts/forums/tribunals at Delhi.

चंपक में प्रकाशित कथा साहित्य में नाम, स्थान, घटनाएं व संस्थाएं काल्पनिक हैं और किसी से उन की समानता संयोग मात्र है.
प्रकाशनार्थ रचनाओं के साथ टिकट लगा पता लिखा लिफाफा भेजना आवश्यक हैं अन्यथा अस्वीकृत रचनाएं लौटाई नहीं जाएंगी. प्रेषित रचनाओं की सुरक्षा/वापसी के लिए कार्यालय का कोई उत्तरदायित्व नहीं है.
दिल्ली प्रैस पत्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड की आज्ञा बिना कोई रचना किसी प्रकार उद्धृत नहीं की जानी चाहिए.
'चीकू' शीर्षक भारत सरकार द्वारा रजिस्टर्ड है. वार्षिक मूल्य केवल क्रेडिट कार्ड/चैक/ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा ही 'चंपक' के नाम से ई-8, झंडेवाला एस्टेट,
नई दिल्ली-110055 को ही भेजें. वी.पी.पी. नहीं. एक प्रति रु. 30.00 (बिना सीडी के),
वार्षिक रु. 576, दो वर्ष रु. 1050. (भारत में)

ग्राहक बनने और वितरण के बारे में विस्तृत जानकारी संपर्क करें:
दिल्ली प्रकाशन वितरण प्राइवेट लिमिटेड
ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-110055
फोन: 91-11-41398888, एक्स. नं. 119, 221, 264.
मोबाइल/एसएमएस/व्हाट्सऐप: 08588843408
ईमेल: subscription @ delhipress.in

दिल्ली प्रकाशन वितरण प्राइवेट लिमिटेड
बी-3, वडाला उद्योग भवन, नैगांव क्रौस रोड, वडाला मुंबई-400031. फोन : 91-22-24122661, 43473050.

- रचनाओं व स्तंभों के लिए ईमेल: article.hindi @ delhipress.in
- निमंत्रणों व प्रेस सूचनाओं के लिए ईमेल: invites.pressrelease @ delhipress.biz
- संपादक को पत्रों के लिए ईमेल: editor @ delhipress. biz
- ग्राहक विभाग के लिए ईमेल: subscription @ delhipress.in

अपनी कहानी, कविता, ड्राइंग्स तथा क्राफ्ट्स यहां भी भेज सकते हैं :
writetochampak@delhipress.in या एसएमएस करें : 09619587613
www. facebook.com/ChampakMagazine और https://www.youtube.com/ user/ ChampakSciQ

अनोखा कदम

कहानी ● इंद्रजीत कौशिक

हरित वन के राजा शेर सिंह अपने मंत्री ब्लैकी भालू के अचानक निधन से बहुत दुखी और परेशान थे. ब्लैकी अपनी बुद्धिमानी से किसी भी समस्या का हल पलक झपकते ही निकाल देता था.

खाली हुए मंत्री पद के लिए जंगल के निवासियों द्वारा तिकड़म लगाई जा रही थी, कोई अपनी वफादारी याद दिला रहा था तो कोई कहीं से इस सीट के लिए सिफारिश लगवा रहा था.

राजा शेर सिंह चाहते थे कि जंगल का नया मंत्री ब्लैकी भालू की तरह ही बुद्धिमान और योग्य हो. योग्य मंत्री का चुनाव करने के लिए उन्होंने घोषणा करवा दी कि इस के लिए एक परीक्षा आयोजित

होगी. मंत्री बनने के लिए जंगल का कोई भी निवासी इस परीक्षा में शामिल हो सकता है. इतने बड़े जंगल का मंत्री होना बहुत गर्व की बात थी, इसलिए बड़ी संख्या में जानवरों ने परीक्षा देने का फैसला किया.

‘‘मुझे यकीन है कि नए मंत्री के रूप में मेरा चुनाव होगा. मैं ने इस के लिए पूरी तैयारी कर ली है,’’ डमडम गधे ने कहा तो उस की बात सुन कर दूसरे जानवर हंसने लगे.

‘‘तुम्हें तो पढ़नालिखना ही नहीं आता, तुम कैसे परीक्षा में पास हो सकते हो?’’ उस के दोस्त ने पूछा. डमडम ने चारों तरफ भेड़बकरियों को देखा और जवाब दिया, ‘‘मैं तो सोच रहा था कि परीक्षा में शक्ल और सूरत देखी जाएगी. इस लिहाज से मैं अपना चयन पक्का समझ रहा था,’’ डमडम बोला तो वहां खड़े सारे जानवरों का हंसहंस कर पेट दुखने लगा.

जंपी सियार और बैडी लोमड़ दोनों इस परीक्षा में धोखा देने की तैयारी कर रहे थे ताकि नकल कर के वे परीक्षा में बाजी मार सकें. अपनी मेहनत के बल पर तैयारी कर के परीक्षा पास करने के बारे में सोचने वाले जानवर बहुत कम थे. जुगाड़ और तिकड़म लगा रहे जानवरों ने पूरी तरह कमर कस रखी थी. वे तो बस पेपर वाले दिन का इंतजार कर रहे थे.

शेर सिंह ने इस परीक्षा को सही तरीके से करवाने का जिम्मा फैटी हाथी को सौंपा था, जिस की ईमानदारी पर किसी को शक नहीं था.

आखिर वह दिन भी आ ही गया. एक बहुत बड़े हौल में सारे परीक्षा देने वाले जानवर अपनीअपनी सीट पर आ कर बैठ गए. परीक्षा के संचालक फैटी हाथी ने उन सब को परीक्षा के नियम समझाए. पेपर बंट चुका था. उस में आए सवाल काफी कठिन थे इसलिए जिन जानवरों ने परीक्षा की तैयारी नहीं की थी उन के चेहरों की हवाइयां उड़ने लगीं, पर भोलू खरगोश तो पेपर मिलते ही उसे हल करने में जुट गया, क्योंकि उसे तो ज्यादातर सवाल आते थे.

अचानक हौल में खुसरपुसर शुरू हो गई, ‘‘मैं जानता हूं कि पेपर बहुत कठिन आया है, इसलिए मैं ने सारे सवालों के जवाब हल कर के पहले ही रखवा लिए हैं. तुम सब चाहो तो चुपचाप इन सवालों को कौपी कर सकते हो,’’ कहते हुए फैटी हाथी ने

परीक्षा दे रहे जानवरों के बीच हल किया हुआ पेपर बांट दिया.

भोलू सहित दूसरे कई ऐसे जानवर थे, जिन्होंने मन लगा कर परीक्षा की तैयारी की थी, वे इस तरह संचालक द्वारा ही खुलेआम नकल करवाते देख कर हक्केबक्के रह गए.

उधर, जिन जानवरों को उत्तर नहीं आ रहे थे वे खुशी से उछल पड़े, क्योंकि उन्हें बैठेबिठाए सारे सवालों के जवाब मिल रहे थे. नकल का पन्ना हाथ में आते ही वे दनादन उस की मदद से सवालों के उत्तर कौपी में लिखने लगे.

भोलू खरगोश को भी कई सवालों का जवाब नहीं आ रहा था. उसे परेशाान देख कर पिछली सीट पर परीक्षा दे रहे पीलू हिरन ने उसे सवालों के उत्तर वाला कागज थमा दिया, ‘‘ले, फटाफट उन सवालों के उत्तर लिख डाल, जो तुझे नहीं आ रहे हैं. ऐसा मौका फिर नहीं मिलेगा.’’

भोलू ने उस के हाथ से पन्ना तो ले लिया मगर उसे नकल कर के पास होने का तरीका बिलकुल अच्छा नहीं लगा.

उस ने हाथोंहाथ वह पन्ना उसे वापस कर दिया और बचेखुचे सवालों के उत्तर अपने दिमाग से देने में जुट गया.

परीक्षा का समय समाप्त होते ही फैटी ने सारे जानवरों की कौपियां इकट्ठी कर लीं. तभी राजा शेर सिंह ने हौल में कदम रखा तो सारे जानवर उन्हें देख कर चौंक गए.

जिन जानवरों ने नकल नहीं की और अपनी मेहनत से सवालों के उत्तर लिखे थे, उन्होंने खड़े हो कर राजा से परीक्षा के संचालक फैटी द्वारा सब को खुलेआम नकल करवाने की शिकायत की तो वे हंसने लगे.

‘‘महाराज, फैटी ने इस परीक्षा को मजाक बनाया है. लेकिन बावजूद आप उसे दंड देने के हंस रहे हैं?’’ भोलू खरगोश ने खड़े हो कर गुस्से से पूछा.

शेर सिंह ने कहा, ‘‘मैं ने ही उसे यह सब करने के लिए कहा था,’’ भोलू हैरान था.

‘‘दरअसल, हमारे लिए इस जंगल के मंत्री के रूप में उपयुक्त उम्मीदवार का चयन करने की बहुत बड़ी चुनौती थी, जिस के लिए राजा ने ही परीक्षा रखने और फिर उस में नकल की छूट देने का आइडिया दिया था,’’ संचालक फैटी हाथी ने राज खोला.

‘‘नकल कर के मंत्री बनने का सपना देखने वाले अयोग्य उम्मीदवारों ने जिस पन्ने की नकल कर के उत्तर दिए हैं वे सारे उत्तर गलत हैं. बिना सोचेविचारे नकल करते हुए वे सब इस बात पर गौर करना ही भूल गए कि उत्तर सही भी हैं या नहीं,’’ राजा शेर सिंह ने पूरी बात बताई.

‘‘जिन जानवरों ने अपनी मेहनत के बल पर सवालों के उत्तर लिखे हैं, उन्हीं कौपियों की जांच कर के परिणाम घोषित किया जाएगा,’’ भोलू और कुछ जानवरों ने राहत की सांस ली, जबकि नकल करने वाले अन्य जानवरों ने एकएक कर के बाहर जाना शुरू कर दिया.

योग्य मंत्री चुनने के लिए राजा शेर सिंह की इस अनोखी रणनीति को सभी ने खूब सराहा. ●

सुंदर रंग भरो

कितनी बुरी

कहानी ● पूनम मेहता

‘‘अरे, कृष्णा इसे बंद कर दो. तुम सुबह से टीवी देख रहे हो,’’ मां रसोई से बड़बड़ाई. पूरे दिन रहरह कर बारिश हो रही थी. कभी धूप निकल आती तो कभी बारिश की बूंदें गिरने लगतीं. मां ने कपड़े धो कर बाहर सुखाए थे. वे चाहती थीं कि गुड्डू उन्हें अंदर ले आए पर गुड्डू तो टीवी देखने में व्यस्त था और सारे कपड़े फिर से गीले हो गए थे.

गुड्डू 9वीं कक्षा में था और वह अपने मोबाइल पर गेम खेलने के बजाय टीवी देखना पसंद करता था. जब वह बाहर नहीं जाता तो पूरा समय टीवी देखने में ही बिताता. उस के पसंदीदा चैनल ‘डिस्कवरी,’ ‘नैशनल जियोग्राफिक,’ ‘बीबीसी अर्थ’ और ‘एनीमल प्लैनेट’ थे. उसे उस के मम्मीपापा ने इन चैनलों को देखने की मंजूरी दी, क्योंकि ये ज्ञानवर्धक थे, लेकिन उन्होंने यह भी सोचा कि इतना टीवी देखना भी आंखों को नुकसान पहुंचा सकता है. डिस्कवरी पर हर तरह के कार्यक्रम दिखाए जाते हैं. खाना बनाने से ले कर पशुपक्षियों की अनदेखी जिंदगी के बारे में जान कर गुड्डू रोमांच से भर उठता. उसे जानवर बहुत प्यारे लगते थे, लेकिन उस के मम्मीपापा उसे टीवी ज्यादा देखने की अनुमति नहीं देते थे.

गुड्डू अकसर सोचता था कि यदि जे.एल. बेयर्ड ने टीवी का आविष्कार नहीं किया होता तो क्या होता? हम सुंदर जंगल और बर्फ से ढके पहाड़ों को नहीं देख पाते.

गुड्डू का घर पार्क के पास था. पिछले सप्ताह बहुत बारिश हुई थी, इसलिए चारों तरफ बहुत हरियाली थी. आज आसमान में

इंद्रधनुष भी देखा जा सकता था.

गुड्डू के पापा औफिस गए थे और मां रसोई में व्यस्त थीं. गुड्डू इंद्रधनुष देखने छत पर गया था, अचानक चीख सुन कर वह भाग कर नीचे आया तो उस ने देखा कि मां पसीनेपसीने हो रही हैं. उन के मुंह से आवाज नहीं निकल पा रही है. मां सामने आटे के डब्बे की ओर इशारा कर रही थीं.

गुड्डू ने उस तरफ देखा तो आटे के डब्बे पर कुंडली मार कर एक सांप बैठा था. गुड्डू का दिल तेजी से धड़क रहा था, पर उस ने समझदारी दिखाई. गुड्डू ने अपने मोबाइल से सांप पकड़ने वालों के नंबर पर फोन किया पर फोन किसी ने नहीं उठाया. इसलिए उस ने मदद के लिए आवाज लगाई. पड़ोस में भी कोई ऐसा नहीं था जो उस वक्त मदद करता. मां को गुड्डू ने दूर हटने का इशारा किया. वह लगातार सांप पर नजरें गड़ाए खड़ा था. जरा सी भी चूक परेशानी में डाल सकती थी. गुड्डू ने डिस्कवरी चैनल पर कुछ दिन पहले ही हूबहू ऐसा ही सांप देखा था. वह जानता था कि यह सांप जहरीला नहीं होता, पर मां ने जब आटे का डब्बा खोला तो शायद उसे चोट लग गई थी. इसलिए वह गुस्से से फुफकार रहा था.

सांप को देख कर गुड्डू और मां दोनों डरे हुए थे. मदद मिलने तक उस जगह को छोड़ा भी नहीं जा सकता था. मां बेहद परेशान थीं.

गुड्डू ने स्टोर से डंडा लिया और एक खाली डब्बा उठाया. उस ने किचन की सारी लाइट्स जला लीं. वह धीरेधीरे आगे बढ़ा और मां को सांप पर नजर रखने की जिम्मेदारी दे दी. उस ने किचन से मुख्य दरवाजे तक जो भी सामान पड़ा था उसे हटा किया.

वह धीरे से आटे के डब्बे के पास पहुंचा. उस का दिल जोर से धड़क रहा था. मां सकते में थीं. वे समझ नहीं पाईं कि गुड्डू क्या करने वाला है. गुड्डू ने डब्बा खोला और सांप के आगे कर दिया और डंडे से उस की पूंछ पर प्रहार किया.

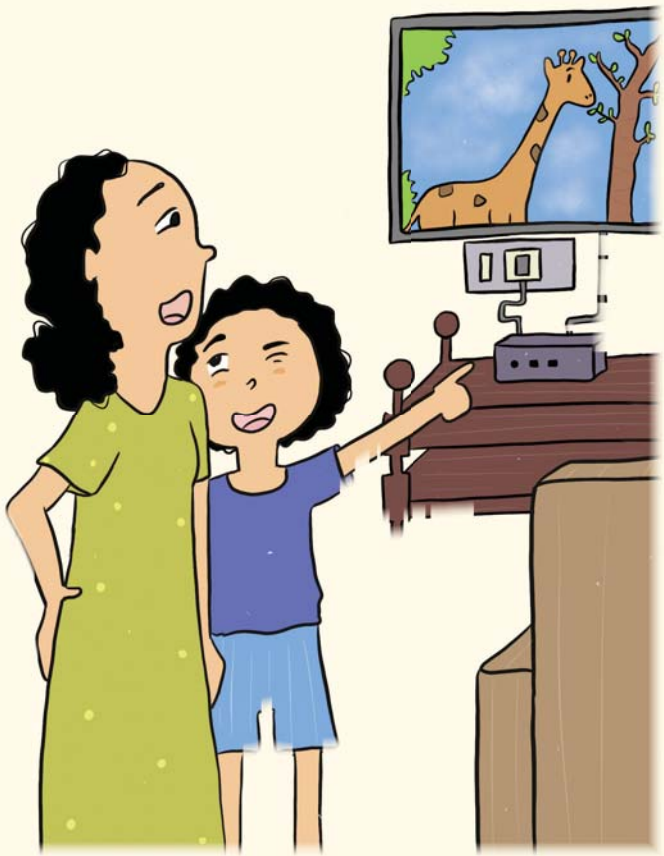

से पूछा, ‘‘बेटा, तुम ने ऐसा करने का साहस कैसे जुटाया?’’ गुड्डू ने टीवी की तरफ इशारा किया.

मां को समझ नहीं आया. गुड्डू ने बताया, ‘‘मैं ने कुछ दिन पहले डिस्कवरी चैनल पर इसी सांप को देखा था. मुझे पता था कि यह सांप जहरीला नहीं है और इसे पूंछ से पकड़ते हैं. मुझे टीवी पर यह कार्यक्रम देख कर आत्मविश्वास आया. इसलिए मैं सांप को पकड़ पाया.’’

मां ने गुड्डू को प्यार से देखा और शाबाशी दी तथा सोचा, ‘आखिर, टीवी इतना भी बुरा नहीं है.’ ●

सांप पलटा और सीधे डब्बे में जा घुसा. गुड्डू ने ढक्कन फटाफट बंद कर दिया. मां देखती रह गईं. उन्हें उम्मीद नहीं थी कि गुड्डू इतना बहादुर और साहसी है. डब्बा गुड्डू ने थैले में डाल कर उस का मुंह बंद कर दिया, तब तक सांप पकड़ने वाले भी आ चुके थे.

गुड्डू की बहादुरी की उन्होंने काफी प्रशंसा की. सांप ज्यादा जहरीला नहीं था, पर एक बच्चे द्वारा यह कार्य किया जाना निश्चित रूप से प्रशंसनीय था. उन्होंने सांप को जंगल में छोड़ने का आश्वासन गुड्डू को दिया.

पड़ोसी भी अब घर के बाहर जमा हो गए थे. सभी गुड्डू की बहादुरी की खूब तारीफ कर रहे थे. मां ने सब के जाने के बाद गुड्डू

देखो हंस न देना

टीचर (छात्र से) : एक सब से शक्तिशाली जानवर का नाम बताओ.
छात्र : उम्मम...आप किस के बारे में सोचती हैं, मैम?
टीचर : बाघ.
छात्र : मेरे विचार से बाघ नहीं घोंघा है.
टीचर : क्यों?
छात्र : क्योंकि वह अपनी पीठ पर अपना घर लेकर चलता है.

योगिता, 10 वर्ष
नई दिल्ली

ऐमी (टौम से) : कौन सा जानवर बिल्डिंग से भी ऊंचा कूद सकता है?
टौम : कंगारू, क्योंकि बिल्डिंग तो कूद नहीं सकती.

प्रियाल गौडमेयर, 9 वर्ष
महाराष्ट्र

टीचर (पेरैंट्स से) : आप का बच्चा बड़ा हो कर डाक्टर बनेगा.
पेरैंट्स : अच्छा, तो क्या वह पढ़ाई में बहुत मेहनत कर रहा है?
टीचर : नहीं, उस की हैंडराइटिंग पढ़ने लायक नहीं है.

ओशी शर्मा, 7 वर्ष,
लातुर

शेखर (बिमल से) : साइंस बुक ने मैथबुक से क्या कहा?
बिमल : अरे, तुम्हारे पास इतनी सारी समस्याएं हैं, वाउ यार.

अक्कू, 6 वर्ष
उत्तराखंड

हाहाहा हाहाहा हीहीहीं हीहीहीं

टीचर (छात्र से) : रिटायर्ड का क्या मतलब होता है?
छात्र : अगर कोई बारबार टायर्ड हो जाए तो इसे रिटायर्ड कहेंगे.

अक्षिता कंडारी, 8 वर्ष, गाजियाबाद

किट्टू (चिंट्टू से) : मछलियां बहुत स्मार्ट हैं, क्यों? कैसे?
चिंट्टू : अरे भई, वे स्कूल (झुंड) में रहती हैं.

वाणी जैन, 11 वर्ष
नई दिल्ली

टीचर (छात्र से) : तुम कल स्कूल क्यों नहीं आए थे?
छात्र : मेरे पापा अस्पताल में हैं.
(7 दिन के बाद)
टीचर : क्या तुम्हारे पापा अभी भी अस्पताल में हैं?
छात्र : हां, वे एक डाक्टर हैं.

जिगिषा शर्मा, 11 वर्ष
जयपुर

बिट्टू और मीत कुछ फल खरीदने के बाद घर लौट रहे थे. मीत ने खरबूजे को नदी में फेंक दिया.
बिट्टू : तुम ने खरबूजे को नदी में क्यों फेंक दिया? उस के पास सिर्फ एक ही बचा था जिसे मैं खरीद पाया था.
मीत : मुझे खरबूजे पसंद नहीं हैं. मुझे तो तरबूज अच्छे लगते हैं.

ज्योथिका जायान, 9 वर्ष
तिरुनेलवेलि

एक प्रसिद्ध धावक रात के समय सड़क पर बहुत तेजी से भाग रहा था. जब उस से पूछा गया कि वह इतनी तेज क्यों दौड़ रहा है तो उस ने कहा, ''मैं एक चोर का पीछा कर रहा हूं.''
पूछने वाला : लेकिन हम तो आप के आगे किसी चोर को भागते नहीं देख रहे हैं.
धावक : मैं ने उसे दौड़ते हुए काफी पीछे छोड़ दिया है.

एम एस बैकुंठ, 9 वर्ष
कोलकाता

बंटी (सीटू से) : किस बिल्डिंग के पास सब से ज्यादा स्टोरीज होती हैं?
सीटू : लाइब्रेरी.

अनन्या रमेश, 8 वर्ष
मुंबई

अपनी पहेलियां, चुटकुले, चित्र या कहानी अपने नाम, उम्र, पता तथा फोन नं. के साथ लिखें:
चंपक, दिल्ली प्रेस, ए-4, श्रीराम इंडस्ट्रियल एस्टेट, वडाला, मुंबई - 400031
ईमल : **writetochampak@delhipress.in**
और **SMS: 9619587613**
औनलाइन विजिट करें :
www.facebook.com/ChampakMagazine
https://www.youtube.com/ChampakSciQ

डमरू और टूथब्रश

कहानी ● शिवेश श्रीवास्तव

डमरू रौबिन खरगोश के यहां काम कर रहा था.

मालिक, आप इस स्टिक से अपने दांतों के साथ क्या कर रहे हैं?

यह स्टिक नहीं है. दांत स्वस्थ और मुंह फ्रेश रखने के लिए यह एक टूथब्रश है. इस से मुंह से वायरस दूर भाग जाते हैं.

वायरस? तो इस का मतलब यह कोविड 19 को हराता है.

देखो, डमरू, मैं ने एक नया फोन खरीदा है. मैं ने इस के लिए 50 हजार रुपए भुगतान किए. इस में एक डुअल कैमरा, ब्लूटूथ, गुड रैम और मेमोरी है. हर चीज बहुत शानदार है.

ओह, इस का ब्लूटूथ है.

हरेक फोन में ब्लूटूथ होता है. अन्य फीचर भी महत्त्वपूर्ण भी होते हैं.

अच्छा, मुझे नहीं पता था कि सभी फोन में यह था.

SONAL

अब मेरे फोन को चार्ज होने के लिए लगा दो चूंकि यह नया है इसलिए इसे फुलचार्ज होने देना.

हां, मैं इसे अभी तुरंत चार्ज कर दूंगा.

कुछ देर बाद

यह तुम क्या कर रहे हो?

मैं इस के ब्लूटूथ को ब्रश कर दे रहा हूं ताकि यह स्वस्थ रहे और इसे कोरोना वायरस न हो जाए.

टूथब्रश का इस्तेमाल दांतों को साफ करने के लिए किया जाता है, मोबाइलफोन को साफ करने में नहीं. ब्लूटूथ का मतलब यह नहीं है कि हमारे फोन में दांत हैं.

आप ने मुझे यह सब पहले क्यों नहीं बताया?

भाग जाओ यहां से. मेरा महंगा फोन बरबाद हो गया, क्योंकि तुम ने इस पर पानी डाल दिया.

मालिक, मैं ने आप के अन्य फोनों को भी ब्रश कर दिया ताकि कोरोना वायरस कहीं से भी आप और आप के निकट आ सके.

अभी तुरंत भाग जाओ. तुम ने मेरे सारे फोन बरबाद कर दिए.

उपहार

कहानी ● ललित शौर्य

दीवाली के अगले दिन सागर भैया दूज को ले कर चिंतित था. दरअसल, वह अपनी बहन पायल को कुछ विशेष उपहार देना चाहता था, लेकिन क्या दे, उस की समझ में नहीं आ रहा था.

पायल हर साल सागर को उस के जन्मदिन पर खास उपहार देती थी. सागर को बहन के उपहार का इंतजार रहता था. ठीक इसी तरह सागर भी पायल को भैया दूज के दिन उपहार देता था.

हालांकि इस साल परिस्थितियां कुछ अलग थीं. कोरोना वायरस संक्रमण के चलते सागर बाजार नहीं जा सकता था. इन दिनों उन के पेरैंट्स ही जरूरी सामान के लिए बाजार जाते थे.

सागर उदास और चिंतित सोफे पर बैठा हुआ था.

''क्या बात है सागर, आज तुम परेशान लग रहे हो? क्या खाने को मिठाइयां नहीं मिलीं?'' दादीमां ने मुसकराते हुए पूछा.

''नहीं दादीमां, ऐसी बात नहीं है. मैं तो सुबह से खूब मिठाइयां खा चुका हूं,'' सागर ने कहा.

''अच्छा, फिर तुम्हारा चेहरा लटका हुआ क्यों है? कोई तो बात है, जिसे तुम मुझ से छिपा रहे हो, मुझे बताओ,'' दादीमां ने जोर देते हुए पूछा.

सागर ने कहा, ''दादीमां, मैं गिफ्ट को ले कर परेशान हूं.''

''गिफ्ट? कौन सा गिफ्ट.''

''भैया दूज का गिफ्ट. आप को तो पता है कि मैं हर साल पायल दीदी को गिफ्ट देता हूं. दीदी भी मुझे मेरे जन्मदिन पर गिफ्ट देती हैं. मैं अगर अभी उन्हें अच्छा उपहार नहीं दूंगा तो मुझे भी जन्मदिन पर अच्छा उपहार कैसे मिलेगा?'' सागर ने कहा.

''ओह, तुम्हें अपने उपहार की ज्यादा चिंता है,'' दादीमां जोर से हंसते हुए बोलीं.

''हाहाहा,'' सागर भी हंसने लगा.

''मैं बताऊं, तुम्हें क्या गिफ्ट करना चाहिए?'' दादीमां ने कहा.

''जी, जरूर, कृपया मुझे बताओ दादीमां,'' सागर ने कहा.

‘‘भैया दूज के अवसर पर भाई, बहन की रक्षा का संकल्प लेता है. तुम्हें ऐसा कुछ उपहार देना चाहिए, जिस से पायल को सुरक्षा का आभास हो. तुम सैनेटाइजर, ग्लब्ज और मास्क गिफ्ट कर सकते हो. ये सब कोरोना संक्रमण रोकने में बहुत कारगर हैं,’’ दादीमां ने कहा.

यह सुन कर सागर को थोड़ा अजीब सा लगा, ‘‘दादीमां, क्या यह सब भी उपहार में दिया जा सकता है,’’ सागर ने पूछा.

‘‘हां, क्यों नहीं दिया जा सकता है. इस महामारी के दौर में हमें ऐसे ही मददगार उपहार देने चाहिए. हमें कोरोना से बचने के लिए सब को जागरूक करना चाहिए कि हम सभी कोरोना वायरस का फैलाव कैसे रोक सकते हैं?’’ दादीमां ने कहा.

सागर ने दादी को गले लगा कर थैंक्स कहा. अब उस की गिफ्ट वाली समस्या का समाधान हो चुका था.

अगले दिन जब पापा औफिस जाने लगे तो उस ने अपनी गुल्लक से उन्हें 500 रुपए दिए.

‘‘पापा, आप इन रुपयों से दीदी के लिए कोई उपहार ले आना. मुझे भैया दूज पर उन्हें उपहार देना निकाल कर है,’’ सागर ने कहा.

‘‘ठीक है, अच्छा, यह तो बताओ कि लाना क्या है?’’ पापा ने पूछा.

‘‘एक रंगीन मास्क, ग्लब्ज और सैनेटाइजर,’’ सागर ने कहा.

यह सुन कर पापा को आश्चर्य हुआ, ‘‘यह सब क्यों?’’ पापा ने पूछा.

‘‘मैं दीदी को गिफ्ट करना चाहता हूं ताकि उन की कोरोना संक्रमण से सुरक्षा हो सके,’’ सागर ने जवाब दिया.

यह सुन कर पापा को बहुत अच्छा लगा. उन्होंने कहा, ‘‘वाह, अब तो हमारा सागर बहुत बड़ा हो गया है, साथ ही समझदार भी.’’

पापा औफिस चले गए. शाम को घर आते समय पापा सारी चीजें एक चमकीले कागज में पैक कर के ले आए थे.

भैया दूज वाले दिन सागर और पायल दोनों जल्दी सुबहसुबह नहाधो कर नए कपड़े पहन कर तैयार हो गए थे.

पायल ने सागर के माथे पर तिलक लगाया और उसे उस की पसंदीदा मिठाई काजू कतली खिलाई. उस की आरती उतारी. सागर ने बदले में पायल को उपहार दिया.

उपहार पा कर पायल बहुत खुश हुई. उस ने गिफ्ट खोल कर देखा. उस में रंगबिरंगे मास्क, सैनेटाइजर की बोतल और ग्लब्ज थे. इस उपहार को पा कर वह खुशी से उछल पड़ी. उस ने सागर को इस अनोखे उपहार के लिए दिल से धन्यवाद दिया. ●

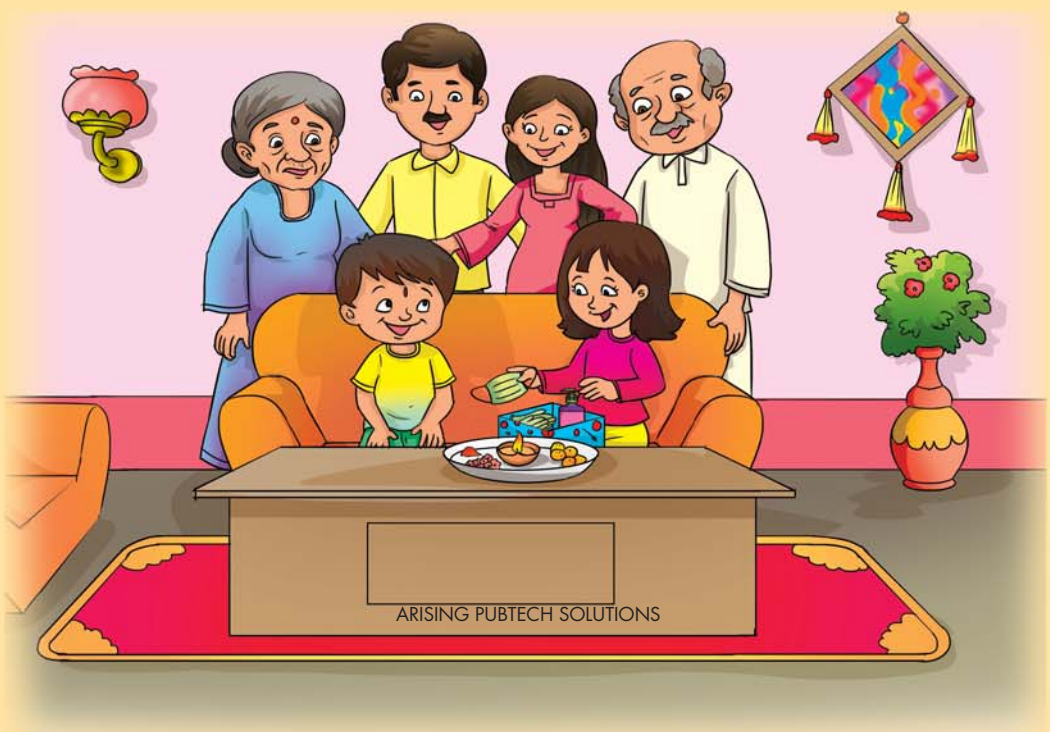

बताओ तो जानें

1. मेरी एक ही आंख है
   लेकिन देख नहीं सकती
   मैं बहुत पतली हूं
   पर सब के काम आती.

2. जबजब मैं नहाता हूं
   छोटा होता जाता हूं
   पर तुम्हारे बदन से
   गंदगी दूर भगाता हूं.

3. जब तुम मुझे खरीदते हो
   तब होता हूं काला
   इस्तेमाल करो तो होता हूं लाल
   फेंकते समय मैं होता धुंधला.

4. मेरी अंगूठियां बनती हैं
   जो सोने जैसी नहीं होती
   लेकिन जैसेजैसे मैं बूढ़ा होता
   वे अंगूठियां मेरी उम्र बतातीं.

देखें तुम कितना जानते हो

1. पृथ्वी पर कितने महाद्वीप हैं?
   (क) 3
   (ख) 7
   (ग) 5
   (घ) 9

2. एक क्यूब (घन) के कितने किनारे होते हैं?
   (क) 15
   (ख) 8
   (ग) 12
   (घ) 16

3. किस भाषा से 'सुनामी' शब्द जुड़ा हुआ है?
   (क) स्पैनिश
   (ख) फ्रैंच
   (ग) इंगलिश
   (घ) जापानी

4. किस गैस को सामान्यतौर पर लाफिंग गैस यानी हंसाने वाली गैस के रूप में जाना जाता है?
   (क) नाइट्रस औक्साइड
   (ख) औक्सीजन
   (ग) कार्बन डायऔक्साइड
   (घ) आर्गन

उत्तर (बताओ तो जानें) : 1- ग्लैड, 2-सावुन , 3-चारकोल, 4-पेंसिल.

उत्तर (देखें कितना जानते हो?) : 1-ख, 2-ग , 3-घ, 4-क.

मजेदार विज्ञान

पानी का घनत्व जानें

पानी में एक अंडे को डुबोएं और तैराएं.

आप को चाहिए :

- 2 कच्चे अंडे
- एक कटोरी नमक
- सादा पानी
- शीशे का 2 गिलास
- एक कटोरी में आइसक्यूब्स
- एक बड़ा चम्मच

ऐसा करें :

1. एक गिलास में नमक मिलाएं और इसे हिलाएं.

2. बड़े चम्मच का इस्तेमाल करते हुए एक अंडा सावधानी से नमकीन पानी में डाल दें.

3. सादा पानी वाले दूसरे गिलास में दूसरे अंडे को डाल दें.

4. हरेक गिलास में आइस क्यूब्स डाल दें.

देखें :

सादे पानी वाले गिलास में अंडा डूब जाता है और आइसक्यूब्स तैरता है. लेकिन नमक वाले पानी में आइसक्यूब्स और अंडा दोनों तैरते हैं.

सोचें :

नमक मिले हुए पानी में अंडा और आइसक्यूब्स क्यों तैरते हैं?

किसी वस्तु का किसी लिक्विड यानी तरल पदार्थ में तैरने की क्षमता को उछाल कहा जाता है. उछाल किसी वस्तु के घनत्व पर निर्भर करता है. एक दिए हुए स्थान में एक वस्तु का घनत्व उस का द्रव्यमान है. एक भारी घनत्व वाली वस्तु का मतलब है कि उस में बहुत ज्यादा द्रव्यमान का होना है, जबकि कम घनत्व की वस्तु का मतलब है उस में कम द्रव्यमान है. उदाहरण के लिए एक वस्तु का किसी लिक्विड में तैरने के लिए जरूरी है कि उस का घनत्व उस लिक्विड से कम होना चाहिए. हमारे इस प्रयोग में सादे पानी वाले गिलास में अंडा डूब गया क्योंकि इस का द्रव्यमान पानी से ज्यादा है. आइसक्यूब्स पानी में तैरता है क्योंकि इस का घनत्व पानी से कम है. नमक मिले पानी वाले गिलास में अंडा तैरता है क्योंकि पानी नमकीन है. जब नमक को पानी में मिलाया जाता है तो नमक के अणु पानी के अणुओं के बीच की जगह में बैठ जाते हैं. इस से पानी के द्रव्यमान बढ़ जाते हैं और अंडे की तुलना में इस का घनत्व बढ़ जाता है. अब चूंकि अंडे का घनत्व नमकीन पानी से कम हो जाता है इसलिए यह तैरता है. आइसक्यूब्स भी तैरता है क्योंकि इस का घनत्व नमक वाले पानी से बहुत कम हो जाता है.

पता करें :

हौट एयर बैलूंस यानी गरम हवा वाले गुब्बारे कैसे तैरते हैं?

commons.wikimedia.org

जब हवा को गरम किया जाता है तब इस के अणु तेजी से घूमना शुरू कर देते हैं और इस वजह से इन के बीच में दूरी बढ़ जाती है. जब यह दूरी बढ़ती जाती है, तो गरम हवा का घनत्व कम होता चला जाता है और ठंडी हवा का बढ़ता जाता है. इस से गुब्बारे को उछाल बहुत ज्यादा मिलता है जो इसे ऊपर की ओर धक्का देता है और गुब्बारा ऊपर की ओर उछाल ले कर उड़ने लग जाता है.

अपने अधिकार जानें

26 नवंबर को देश में संविधान दिवस मनाया जाता है. इसे भारत में संविधान को अधिग्रहण यानी अपनाने के रूप में मनाया जाता है. संविधान अधिकारों, नियमों और कानूनों का एक समूह है जिस का हम पालन करते हैं. नीचे चित्र को देखिए और वास्तविक अधिकारों की पहचान कीजिए जो हमें देश का नागरिक होने के नाते प्राप्त हैं.

रात देर तक बाहर रहने का अधिकार.

पर्यावरण साफ रखने का अधिकार.

जंकफूड खाने का अधिकार.

शिक्षा प्राप्ति का अधिकार.

भाषण देने का अधिकार.

उद्दंडता करने का अधिकार.

समानता का अधिकार.

उचित चिकित्सा प्राप्त करने का अधिकार.

सुनने का अधिकार.

उत्तरः अंतिम पृष्ठ पर देखें.

पहाड़ी से मुलाकात

कहानी ● डा. के. रानी

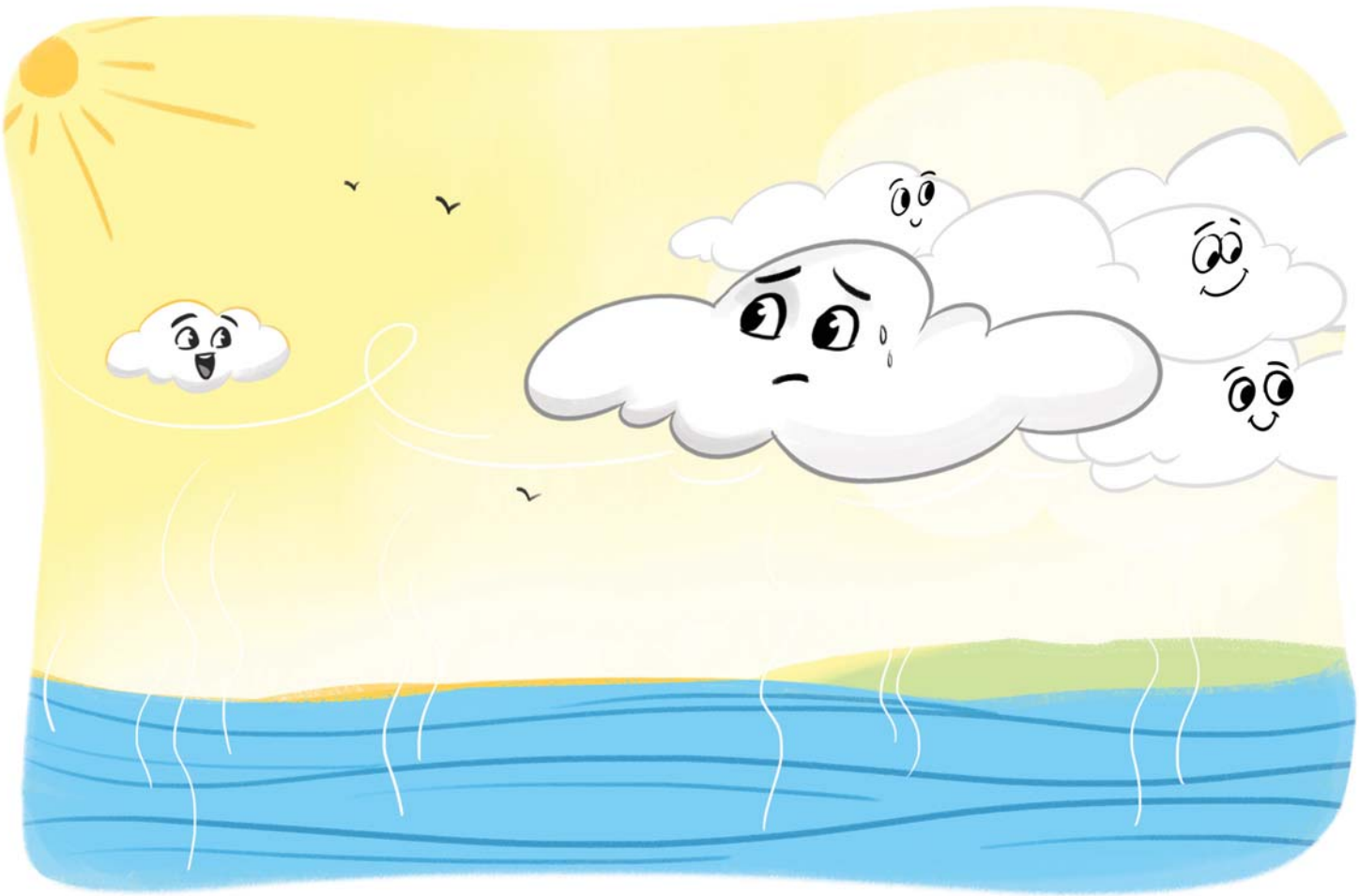

‘‘गरमी चरम पर थी. गरमी की वजह से समुद्र से बहुत तेजी से भाप उठ रही थी और उस से लगातार बादल बन रहे थे. उन बादलों ने हवा के साथ उड़ना शुरू कर दिया. बादलों के समूह में एक छोटे बादल का टुकड़ा भी शामिल था. जैसे ही छोटे बादल का टुकड़ा आसमान में पहुंचा. उस के समीप घूम रहे बड़े बादल ने पूछा,‘‘तुम कहां जा रहे हो?’’

‘‘मैं बस चारों ओर घूमना चाहता हूं,’’ छोटे बादल ने उत्तर दिया.

‘‘इतनी भी जल्दी क्या है? कुछ देर हम से भी बातें कर लो, तब चले जाना.’’

‘‘मैं दुनिया घूमना चाहता हूं. कृपया मुझे अभी जाने दो, क्योंकि मैं आकाश में तैरता हुआ पूरी दुनिया को देख कर बहुत खुश हूं,’’ छोटे बादल ने जवाब दिया.

‘‘क्या अकेले जाने में तुम्हें डर नहीं लगेगा? आप मेरी बात ध्यान से सुनो और जल्दबाजी मत करो. हम सब को मिलजुल कर एकसाथ रहना चाहिए. इस से हमारी एकता बनी रहती है और हम अपना काम भी वक्त पर पूरा कर लेते हैं,’’ बड़े बादल ने समझाया.

‘‘तुम मेरी चिंता मत करो,’’ छोटे बादल ने कहा.

‘‘हम तुम्हारी चिंता कैसे न करें? हम सब एक ही पिता की संतान हैं. अगर हम में से कोई एक गायब

हो जाता है, तो हम में से किसी को भी अच्छा नहीं लगता.''

''किसी में इतनी हिम्मत नहीं है कि मेरा अस्तित्व मिटा दे. एक दिन तुम देखोगे, मैं सकुशल तुम सब के पास लौट कर आ जाऊंगा.''

''मैं प्रार्थना करता हूं कि यह सच हो,'' पास में तैरते बड़े भूरे बादल ने कहा.

''आप प्रार्थना क्यों करते हैं,'' छोटे बादल ने पूछा.

''कहीं रास्ते में किसी ने तुम्हें रोक लिया तो क्या होगा? हम सब साथ रहते हैं तो कोई न कोई बच ही जाता है और इस तरह हम बादलों के अस्तित्व को बचा कर रखते हैं,'' बड़े बादल ने कहा.

''मुझे रोकने की ताकत किसी में नहीं है,'' छोटे बादल ने घमंड से कहा.

''भूरा बादल उस की मासूमियत पर मुसकराया और बोला, ''ऐसा न कहो. हमें रोकने का साहस किसी में तो है.''

''कौन है वह?'' छोटे बादल ने पूछा.

''जब तुम उस से मिलोगे तो तुम्हें खुद ही पता चल जाएगा.''

''तब की तब देखी जाएगी. अभी तो मैं जा रहा हूं,'' छोटा बादल बोला और इतराता हुआ तुरंत वहां से निकल पड़ा.

हवा के साथ आकाश में उड़ने में उसे बड़ा मजा आ रहा था. वहां से उस ने पृथ्वी पर पेड़ पौधों और जंतुओं को देखा. सब बहुत छोटे दिखाई दे रहे थे. आसमान में उड़ने वाली पतंगों ने उसे बड़ा खुश किया और वह उन से भी ऊंचा उड़ गया.

भयंकर गरमी ने पौधो और जानवरों को परेशान कर दिया था. वे बारिश की उम्मीद में आसमान की तरफ देखते रहे.

अचानक यह छोटा बादल जैसे ही सत्यवन के ऊपर से गुजरा, थोड़ी देर के लिए सूरज की तपिश से जीवजंतुओं ने राहत की सांस ली. उन्होंने ऊपर देखा तो बादल का एक दुकड़ा सूरज के सामने से गुजर रहा था. उसे देख कर वे खुश हो गए. वन का सब से ऊंचा पेड़ जोर से चिल्लाया, ''बादल भाई, प्लीज, थोड़ी देर और यहीं पर खड़े रहो. तुम्हारे कारण हमें धूप से राहत मिल रही है.''

छोटे बादल ने हंसते हुए कहा, ''भाई, मैं घुम्मकड़ हूं और पूरी दुनिया घूमने निकला हूं, मैं यहां कैसे रुक सकता हूं.''

''तुम हमें तपती धूप से थोड़ी देर के लिए राहत दे सकते हो. हम सब आप के आभारी होंगे,'' पेड़ ने प्रार्थना की.

''नहीं भाई, मैं इतनी देर यहां नहीं ठहर सकता?'' छोटे बादल ने उत्तर दिया.

''अच्छा, तो आप हमें थोड़ी सी बारिश से नहला सकते हो?'' पेड़ ने पूछा.

''मेरे हिसाब से यहां का मौसम अभी बारिश के लायक नहीं है.''

''ये क्या कह रहे हो? वन ऐसे ही तो होते हैं. हर साल इस समय यहां बारिश होती है,'' पेड़ बोला.

''मुझे यकीन है कि थोड़ीबहुत बारिश होगी, जरा ध्यान से अपने वन को करीब से देखो. तुम तो यहां वर्षों से खड़े हो.''

''इस वन में पेड़ों की संख्या पर्याप्त नहीं है. तुम्हें मालूम होना चाहिए कि बादलों को बरसने के लिए पेड़ आकर्षित करते हैं,'' छोटे बादल ने समझाया.

''कहते तो तुम ठीक हो. पहले के मुकाबले यहां पेड़ों की संख्या घट गई है. क्या तुम हमें सुझाव दे सकते हो कि हमें क्या करना चाहिए?'' पेड़ ने पूछा.

''तुम्हें अपने वन की हरियाली बढ़ानी होगी. तब जा कर तुम बादलों को अपनी ओर आकर्षित कर सकते हो,'' छोटे बादल ने कहा और हवा के साथ तैर गया.

वनवासी उसे दुखी हो कर जाते हुए देख रहे थे. छोटा बादल जल्द ही हर्षिल वन नामक जंगल के ऊपर से गुजर रहा था. इस वन के निवासी भी गरमी की तपिश से बेहाल थे. आकाश में छोटे बादल के टुकड़ों को देख कर वहां के पौधे और जानवर काफी खुश थे.

एक बड़े से पेड़ की ऊंची डाल पर बैठा बिग्गी बाज बोला, ''हमें गरमी से नजात दिलाने के लिए बादल इधर आ रहे हैं. यह जरूर यहां पानी बरसा कर जाएंगे,'' उस ने बादल को जोर से पुकारा, ''बादल भाई, तुम्हें देख कर हम सब बहुत खुश हैं. हमारे वन में तुम्हारा स्वागत है.''

''धन्यवाद, लेकिन मुझे समझ नहीं आया कि मेरे आने से ऐसे क्या नई बात हो गई?'' छोटे बादल ने उलझन में पूछा.

''ओह, तुम तो उड़े जा रहे हो. जरा ठहरो तो सही. दो मिनट बात करते हैं. तुम्हें पता नहीं है कि हम कब से तुम्हारी राह देख रहे हैं,'' बिग्गी ने निवेदन किया.

''ऐसा क्यों है?''

बिग्गी बोला, ''हम सब गरमी से बेहाल हैं. प्लीज, यहां थोड़ा सा पानी बरसा दो.''

''बारिश के लिए तो तुम्हें अभी कुछ दिन और बरसात के मौसम का इंतजार करना होगा. मुझे खेद है कि मैं अब यहां नहीं रुक सकता,'' छोटे बादल ने कहा.

''लेकिन बादल भाई, तुम हमारी मदद क्यों नहीं कर सकते? तुम देख सकते हो कि हम पानी के लिए कितना तरस रहे हैं,'' बिग्गी बोला.

''इस वन में इतने पेड़पौधे नहीं हैं कि वे मुझे हवा के

साथ बहने से रोक लें और मैं यहां पर कुछ देर रुक कर बरसने के लिए मजबूर हो जाऊं.''

''तो क्या इस का मतलब यह है कि हमें ऐसे ही गरमी में बारिश के लिए तड़पना होगा?'' बिग्गी ने निराश हो कर पूछा.

''हां बिग्गी, बरसात आने तक तो तुम्हें यह सब सहना ही पड़ेगा,'' इतना कह कर खुशीखुशी छोटे बादल का टुकड़ा हवा के साथ और आगे बढ़ गया.

कुछ दिन बीत चुके थे. बादल का टुकड़ा इसी तरह अकेला आसमान में घूमता हुआ मौजमस्ती कर रहा था. एक दिन उड़ते हुए वह एक पहाड़ी जगह पर पहुंचा. पहाड़ी हरेभरे पेड़ों और झाड़ियों से ढकी हुई थी.

पेड़ों पर ढेरों पक्षियों ने अपने घोंसले बनाए थे. वे पेड़ों पर बैठ कर मधुर गीत सुना रहे थे. बादल को यह सब देख कर बहुत अच्छा लगा. वह उन के मीठे गीत सुनने के लिए जरा और नीचे आ गया और कुछ देर के लिए ठहर गया. उसे देख कर वे भी खुश थे. पुराने उम्रदराज देवदार के पेड़ ने उस से पूछा, ''बादल भाई, तुम अकेले कहां जा रहे हो?''

''ओह, मैं तो दुनिया घूमने के लिए निकला हूं.''

''यह तो तुम बहुत अच्छा काम कर रहे हो. आकाश से धरती सुंदर दिखती होगी,'' पेड़ ने कहा.

''हां, बहुत अच्छी दिखती है. खास कर यह पहाड़ी बहुत खूबसूरत लगती है. मुझे लगता है कि अब मैं आगे नहीं जा सकूंगा,'' छोटे बादल ने कहा.

''ऐसा क्यों कह रहे हो?''

''इस वन की हरियाली और सुंदरता ने मुझे बांध लिया है. मेरा जी करता है कि मैं यहीं बरस जाऊं और तुम सब की प्यास बुझाऊं.''

''यह तो एक बहुत अच्छा विचार है,'' पेड़ सहमत हुए.

''यह पहाड़ी है ही इतनी प्यारी कि मेरा जी करता है कि तुम सब के साथ पानी बन कर यहीं रहने लगूं,'' इतना कहते ही बादल ने पहाड़ी पर भारी बारिश की और हवा में गायब हो गया. इस समय उसे भूरे बादल की बात याद आ रही थी. पहाड़ी पर अचानक हुई बारिश के कारण सब के चेहरे खिल उठे थे.

जब छोटे बादल का टुकड़ा कई दिन तक वापस लौट कर नहीं आया तो उस के साथी समझ गए कि जरूर उस की मुलाकात किसी पहाड़ी से हो गई है और उस ने उसे हमेशा के लिए मजबूर कर दिया है. उस के सभी दोस्त खुश थे. आखिर बादल के टुकड़े ने अपना काम सब से पहले पूरा कर धरती की प्यास बुझा दी थी. ●

विश्व शौचालय दिवस

19 नवंबर को विश्व शौचालय दिन है. यह दिवस 4.2 अरब लोग जिन की पहुंच साफ शौचालय तक नहीं है, उन में जागरूकता लाने के लिए शौचालय दिवस मनाया जाता है. नीचे चित्र को देखें और सही कार्य पर निशान लगाएं.

सीमा शौच करने के बाद शौचालय के फ्लश को चला देती है.

राहुल खुले में पेशाब करता है.

अदिति शौचालय का इस्तेमाल करने के बाद अपने हाथ धोती है.

चंचल काफी टौयलेट पेपर का इस्तेमाल करती है.

समीर सार्वजनिक शौचालय का इस्तेमाल करता है, लेकिन उसे साफ नहीं रखता है.

साहिल टौयलेट पेपर का इस्तेमाल करने के बाद उसे फर्श पर फेंक देता है.

जब अजय सार्वजनिक शौचालय में जाता है तो वह अपनी लाइन तोड़ कर आगे चला जाता है.

श्रेया शौच के बाद अपने हाथ साबुन से नहीं धोती है.

शौचालय को हंसिका इस्तेमाल करने के बाद साफ रखती है.

उत्तरः अंतिम पृष्ठ पर देखें.

चीकू

चित्रकथा : दास

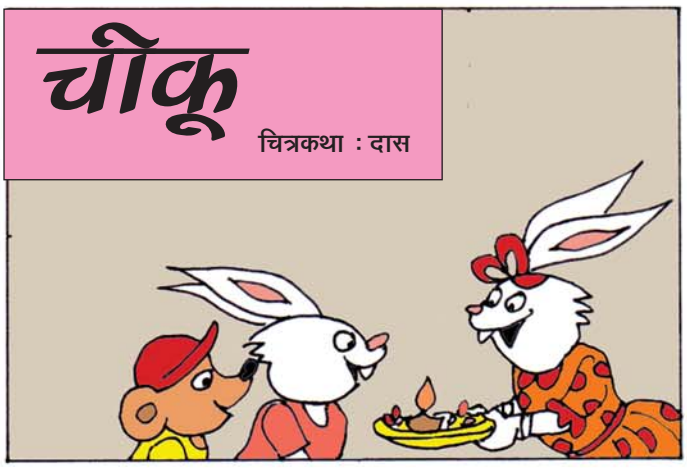

चलो, जंगल सफारी पर चलते हैं.
मैं भी साथ चलना चाहती हूं.

नहीं, तुम हमारे साथ नहीं चल सकतीं. जंगल खतरों से भरा है और तुम डर जाओगी और सारा मजा खराब कर दोगी.
मैं डरपोक नहीं हूं.

चीका को साथ चलने दो. मैं वहां रहूंगा और उस का खयाल रखूंगा.

ठीक है, लेकिन चीका, तुम्हें अपने रास्ते से भटकना नहीं है. हमेशा हमारे पास रहना और साथ चलना है.
मैं क्यों भटकूंगी? मैं तो तुम सब के पीछेपीछे चलूंगी.

वे जंगल की ओर जाने लगे.
वे इतनी तेजी से चल रहे हैं. मैं उन के साथ कैसे चलूं?

चीका, तुम पीछे क्यों छूट जा रही हो? तेज चलो.
मैं ने तुम्हें बताया था कि उसे अपने साथ लाना अच्छा नहीं रहेगा.

अचानक उन्हें शेर की दहाड़ सुनाई दी.
अरे, यह तो बहुत ही डरावना थी.
देखो, अब वह डर गई है.

चलो, हम जंगल छोड़ देते हैं और खुले मैदान से आगे जाते हैं.
हां, हम ऐसा ही करते हैं.

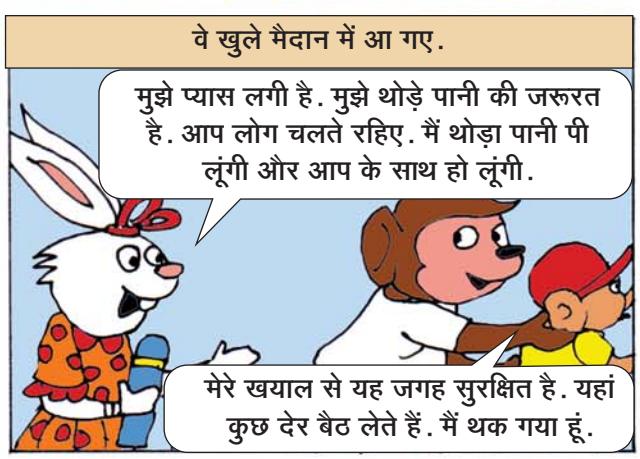
वे खुले मैदान में आ गए.
मुझे प्यास लगी है. मुझे थोड़े पानी की जरूरत है. आप लोग चलते रहिए. मैं थोड़ा पानी पी लूंगी और आप के साथ हो लूंगी.
मेरे खयाल से यह जगह सुरक्षित है. यहां कुछ देर बैठ लेते हैं. मैं थक गया हूं.

चलो, वहां बैठते हैं.

वे एक बड़े शिलाखंड पर बैठ गए.

यह शिलाखंड तो आगे बढ़ रहा है. मीकू, क्या तुम ने इसे आगे बढ़ाया?

मैं ने? क्या तुम यह सोचते हो कि मैं इतने बड़े एक शिलाखंड को आगे बढ़ा सकूंगा?

यह एक शिलाखंड नहीं था बल्कि एक सोया हुआ गैंडा था.

मेरे ऊपर बैठने की तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई?

गैंडे ने चीकू और बिट्टू को पकड़ लिया. मीकू भाग रहा था. लेकिन उस की पूंछ फंस गई.

आह, मैं भाग नहीं पा रहा हूं.

चीका जब लौट रही थी तो उस ने गैंडे को देखा.

अरे, मेरे साथी तो खतरे में हैं. मैं क्या करूं? इन्हें कैसे मुक्त कराऊं?

मैं गैंडे से लड़ने के लिए सक्षम तो नहीं हूं लेकिन मैं उस से बात तो कर ही सकती हूं.

चीका गैंडे के पास गई.

हे महान गैंडे. आप अपराजेय हैं. आप को हराया नहीं जा सकता. कृपया आप उन्हें छोड़ दीजिए.

तुम कौन हो?

मैं उन की बहन हूं. वे कुछ भी नहीं हैं, सिर्फ मुसीबत हैं और आप के लिए इन का कोई महत्त्व नहीं है.

हम्म... कितनी दयालु बहन है. वह मेरे पास बहादुरी के साथ अपने भाइयों की जान बचाने के लिए बात करने आई है. ठीक है, मैं तुम सभी को जाने देता हूं. मुझे फिर कभी भी परेशान मत करना.

उन्होंने वापस भागना शुरू कर दिया.

मैं जानता था, चीका बहादुर है.

सच में, और तुम ही तो एक हो जो भाग रहे थे. हा, हा, हा.

कुक्की की जीत

कहानी ● स्निग्धा श्रीवास्तव

चंदनवन को इस साल सूखे का सामना करना पड़ा, जिस के कारण अधिकांश पशुपक्षी और जानवर अलगअलग जंगलों में अपना घर बसाने चल दिए थे. कुक्की कोयल भी अपने परिवार के साथ पास के जंगल में रहने आ गई थी.

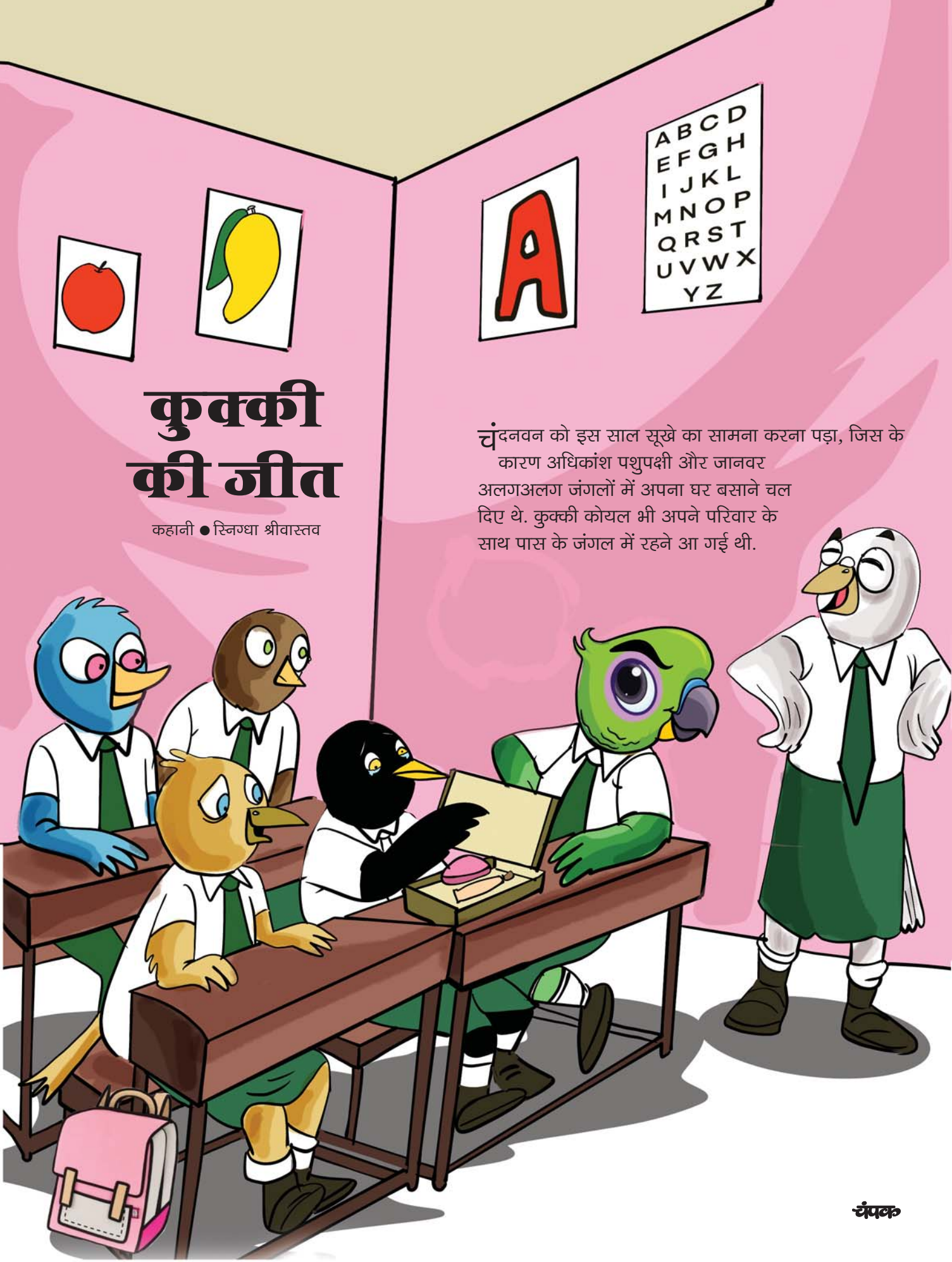

कुक्की कोयल शर्मिली पर बड़ी होनहार थी. नए स्कूल में पहुंचने पर जल्दी ही उस की कई सहेलियां बन गई थीं.

स्कूल में गौरा नाम की एक कबूतरी थी, जो बड़ी घमंडी थी. हर समय दूसरे का मजाक उड़ाना उस की आदत थी. जब गौरा ने देखा कि कुक्की की कई नई सहेलियां बन रही हैं तो उसे मन ही मन जलन हो उठी. वह हर वक्त कुक्की को नीचा दिखाने की ताक में रहती थी. वह कभी कुक्की के काले रंग का मजाक उड़ाती तो कभी उस के चुप रहने के कारण उसे डरपोक कह कर चिढ़ाती, लेकिन कुक्की कुछ नहीं कहती व चुपचाप हंस कर रह जाती.

कुछ सप्ताह बाद कुक्की का जन्मदिन था तो वह ढेर सारी टौफियां ले आई और स्कूल में अपनी सहेलियों को बांटी. गौरा ने भी टौफी लेते हुए कहा, ‘‘हमें पहले बता देती तो हम तुम्हारे लिए कोई उपहार भी ले आते,’’ गौरा के मुंह से ऐसी बात सुन कर सभी हैरान थे.

दूसरे दिन एक सुनहरे कागज में लिपटा हुआ एक उपहार गौरा ने कुक्की को दिया और बोली, ‘‘कृपया मैं चाहती हूं कि तुम यह उपहार सभी सहेलियों के सामने खोलो.’’

जब सभी सहेलियां आ गईं, तब बड़ी उत्सुकता से कुक्की ने उपहार खोला. डब्बे के अंदर एक साबुन और एक फेयरनैस क्रीम रखी हुई थी.

कुक्की की आंखों में आंसू आ गए, पर गौरा खुश थी. वह जोरजोर से हंस कर लोटपोट हुए जा रही थी.

सभी सहेलियों ने कुक्की को ईंट का जवाब पत्थर से देने को कहा, पर कुक्की चुप रही और कुछ नहीं बोली. सहेलियों ने भी जब गौरा को टोकना चाहा तो कुक्की ने उन्हें भी रोक दिया. कुक्की बोली, ‘‘मेरी मां कहती हैं कि कभीकभी एक चुप्पी सौ बलाओं को टालती है. हमारे बोलने से तो लड़ाई और बढ़ेगी, इस से बेहतर है कि हम चुप ही रहें.

गौरा के घमंडी स्वभाव के कारण हर कोई उस से दूर होता गया व कुक्की के मधुर व्यवहार से सब उस से दोस्ती करते गए. धीरेधीरे गौरा बिलकुल अकेली पड़ गई, लेकिन उस के घमंड में जरा भी कमी नहीं आई थी.

जल्दी ही स्कूल का वार्षिकोत्सव आ गया, जिस में शिक्षकों द्वारा एक संगीत प्रतियोगिता का आयोजन रखा गया. कुक्की को प्रतियोगिता में नाम लिखवाते देख कर गौरा भी जोश में आ गई और उस ने भी प्रतियोगिता के लिए अपना नाम लिखवा दिया.

प्रतियोगिता वाले दिन जैसे ही गौरा का नाम पुकारा गया, वह स्टेज पर जा कर माइक के सामने खड़ी हो गई व बेसुरी आवाज में गाने लगी.

स्कूल के सारे बच्चे पेट पकड़ कर जोरजोर से हंसने लगे. वे 'गौरा हाय' कह कर चिल्लाने लगे. गौरा किसी तरह अपना गीत पूरा कर स्टेज से नीचे उतर आई.

कुछ देर बाद जैसे ही कुक्की ने स्टेज पर गाना शुरू किया तो पूरा हौल तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा. बच्चों की फरमाइश पर कुक्की को दोबारा गीत सुनाना पड़ा. कुक्की की सुरीली व मधुर आवाज पर हर कोई झूम रहा था.

गौरा मन ही मन अपनेआप पर शर्मिंदा थी. आज उसे अपनी गलती का एहसास हो गया था.

वह समझ गई थी कि केवल रंगरूप ही सबकुछ नहीं होता. सब का प्यार पाने के लिए अच्छे गुण और अच्छे व्यवहार का होना भी जरूरी होता है.

कुक्की के स्टेज से नीचे उतरने पर गौरा ने उस के पास जा कर उस से माफी मांगी. उस दिन से गौरा भी कुक्की की सहेलियों में शामिल हो गई. ●

बिंदु मिलाओ

अंकों के अनुसार बिंदुओं को मिलाएं और चित्र पूरा करें.

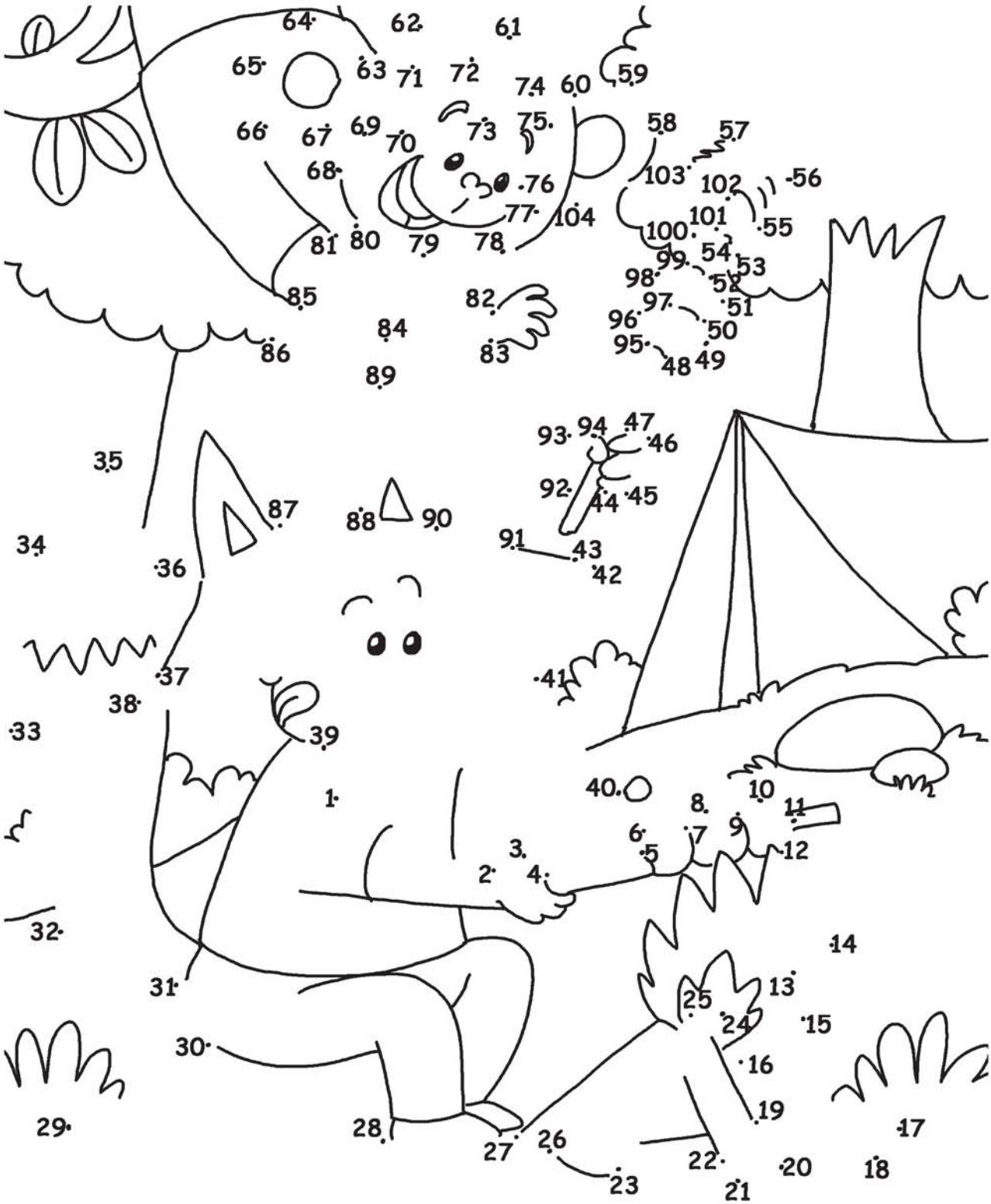

किमी की दोस्त

कहानी ● सुधा गोस्वामी

जब किमी यमी के घर आई तो सभी लोगों ने खुश हो कर गर्मजोशी से उस का स्वागत किया. किमी बहुत ही प्यारी थी, लेकिन उस का डीलडौल देख कर यमी सहम गई थी, क्योंकि उस की नस्ल ही कुछ डरावनी थी.

''ग्रेट डेन नस्ल होती ही ऐसी है,'' पापा ने बताया.

''तुम लोग उस की शक्ल मत देखो. जब वह तुम्हारे साथ हिलमिल जाएगी, तब तुम्हें डर नहीं लगेगा,'' मां बोलीं.

यमी ने उसे छूने की कोशिश की, तो वह भौंकने लगी. उस की आवाज से वह फिर डर गई.

''बड़ी डरपोक हो भई तुम, देखो, मैं उसे छू कर दिखाता हूं,'' कह कर पापा ने किमी को अपनी गोद में उठा लिया.

''तुम्हारे घर कौन आया है?'' मिती ने पूछा.

मिती यमी की पड़ोसी और फ्रेंड थी. उसे भी कुत्तों से डर लगता था. फिर किमी की मौजूदगी ने उसे भी डरा दिया था.

''ओह, इतना खतरनाक कुत्ता? इस से दूर ही रहो, कहीं काट न ले?'' उस की दादीमां बोलीं.

''नहीं दादीमां, यह नहीं काटती. मेरे पापा ने अभीअभी इसे गोद में उठाया था.''

''नहीं, नहीं, जानवर का कोई भरोसा नहीं होता. क्या पता कब उस का मिजाज बदल जाए और वह काट ले. तब आप को इंजैक्शन लगवाने पड़ेंगे,'' बड़बड़ाती हुई दादीमां बोलीं.

बच्चे इस बात से असमंजस में थे कि क्या करें. किमी को पालतू जानवर के रूप में रखा जाए या वापस कर दें?

''डरो मत बच्चो, मैं इसे पालने में तुम्हारी मदद करूंगा. मैं सुबहशाम इसे सैर पर ले जाऊंगा,'' पापा ने कहा तो यमी खुश हो गई.

''बस, इस बात का ध्यान रखना कि जब वह खा रही हो या आराम कर रही हो तो उसे परेशान न करें,'' मां ने समझाया.

''ठीक है मां,'' वह उस के पास गया और फिर उस की पीठ पर हाथ फेरा. वह भी पूंछ हिलाने लगी.

अब यमी का डर खत्म हो गया था. वह और किमी उस दिन से अच्छे दोस्त बन गए. यमी की मां स्कूल जाते समय किमी का ध्यान रखती. कुछ दिनों बाद वह खूब हैल्दी हो गई और पड़ोस के कुत्तों से काफी बड़ी हो गई.

सब उस से खुश थे. उन का भी मन लग जाता था और यमी को अकेलापन भी महसूस नहीं होता था.

किमी का रंग भी चितकबरा व हल्का गुलाबी बहुत प्यारा था. जब वह दौड़ती तो ऐसा लगता मानो हिरण भाग रहा हो.

यमी कहती, ''किमी, तुम्हारी बकरी जैसी खाल और हिरणी जैसी चाल है.''

यमी किमी के साथ खूब भागती. महल्ले के सारे बच्चे भी उस के साथ भागे. उस की पतली कमर और पेंडुलम की तरह हिलती पूंछ देख कर वह खूब हंसती. किमी को नींद भी बहुत कम आती थी, लेकिन वह जरा सी आवाज आते ही अलर्ट हो जाती और खूब भौंकती.

उस की आवाज से पता चल जाता कि कोई आया है. अब उन्हें घर में चोरी होने का भी डर नहीं था. एक फायदा यह हुआ कि बिल्लियों का आना भी बंद हो गया. बिल्ली की आवाज सुनते ही वह उन पर अटैक करती, जबकि बगल वाले घर में बिल्लियों ने सब की नाक में दम कर रखा था. एक बूढ़ी बिल्ली अपने बच्चों के साथ छत पर जाती और रोज एक कबूतर या चिड़िया का शिकार करती और फिर बालकनी में बैठ कर मजे से उसे खाती. उस के पेरैंट्स ने उन्हें भगाने की कोशिश की, लेकिन सब बेकार हो गया था.

लेकिन यमी ने उन की यह समस्या आसानी से हल कर दी. उस ने अपनी प्यारी किमी को छत के दरवाजे से बांध दिया और अब तो बिल्ली भी आने से डर रही थी. जैसे ही वह आई, वह उस के ऊपर हमला करने के लिए लपकी और जोरजोर से भौंकने लगी.

शाम को जब सब लोग गहरी नींद में सो रहे थे. उस की आवाज से वे उठ कर बाहर आए, देखा तो बिल्ली अपने बच्चों के साथ काफी दूर चली गई थी.

उन्होंने यमी को धन्यवाद दिया और किमी को प्यार से थपथपाया. दादीमां ने भी उसे पसंद किया और कहा कि वे अब उस से नहीं डरेंगी. उस ने सभी को जानवरों को प्यार करने के लिए कहा.

अब यमी की फ्रैंड को पूरे महल्ले वाले प्यार करते थे. ●

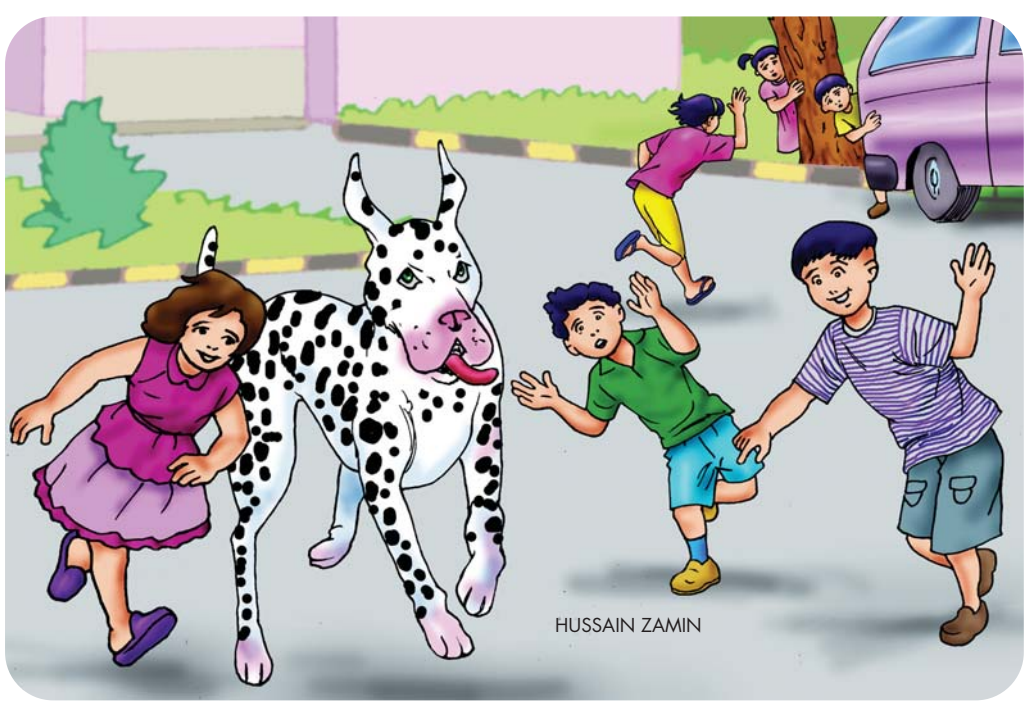

इस चित्र में कुछ हिस्से खाली रह गए हैं. चित्र को देखें, उन्हें पूरा करें और फिर इन में रंग भरें.

चित्र पूरा करें

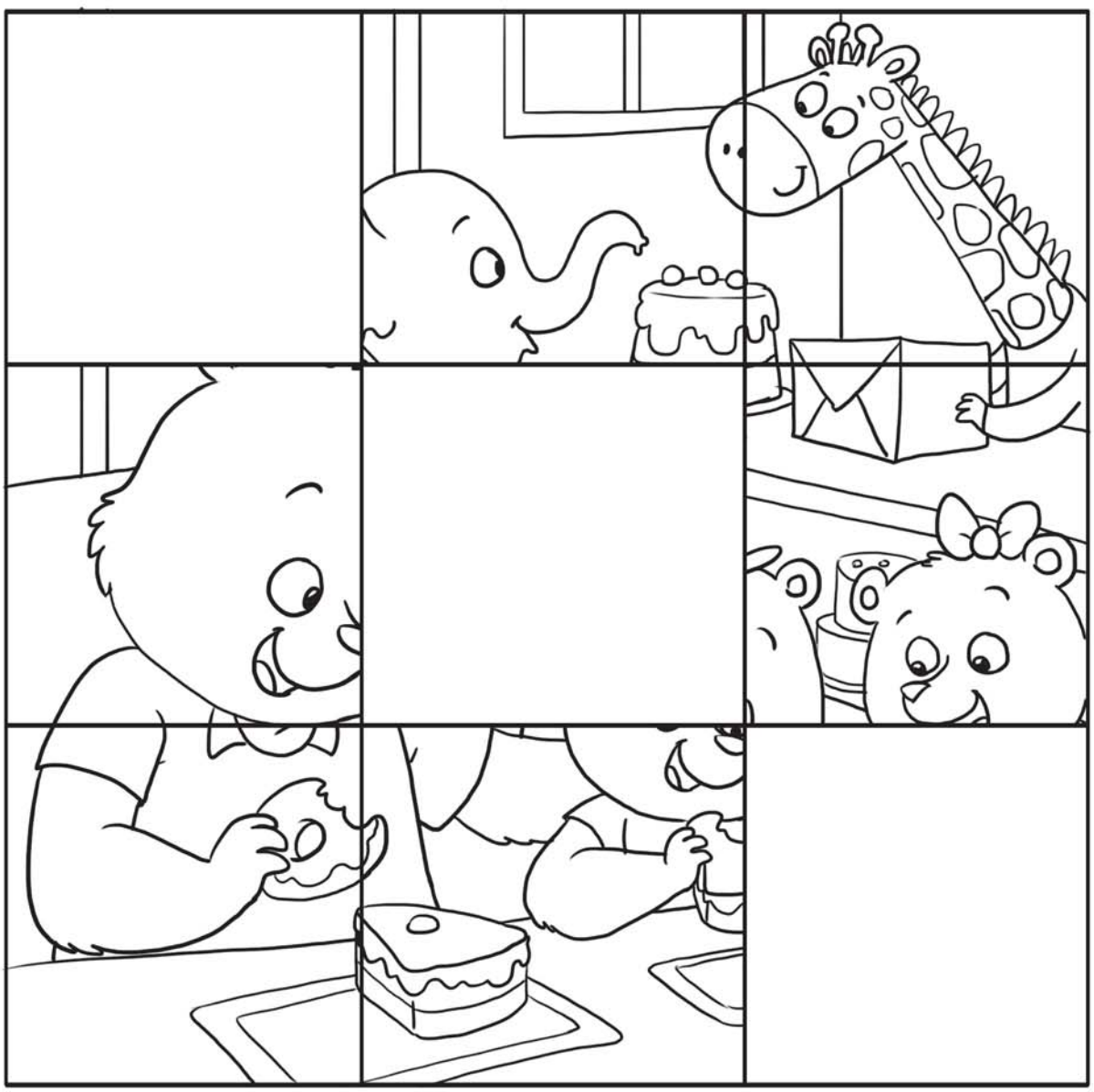

छिपे चित्र ढूंढ़ें

सारा और उस के दोस्त पैस्ट्री शौप पर हैं. शौप में 10 ब्लूबैरी मफ्फिन यानी चपाती छिपी हुई हैं. उन्हें ढूंढ़ें.

उत्तरः अंतिम पृष्ठ पर देखें.

टौयलेट रोल स्टैंप्स

पलक शाह

स्मार्ट

19 नवंबर को वर्ल्ड टौयलेट डे है. टौयलेट रोल्स का इस्तेमाल करते हुए कुछ आश्चर्यजनक खूबसूरत स्टैंप्स बनाइए.

आप को चाहिए : खाली टौयलेट रोल्स, कैंची, ऐक्रिलिक पेंट्स, पेंटब्रश, चार्टपेपर, पेपर कटर, रबरबैंड्स.

ऐसे बनाएं :

1. टौयलेट रोल के एक छोर पर बराबर लंबाई की परिधि पर चारों ओर पट्टियां काट लें. फूल का आकार बनाने के लिए पट्टियों को बाहर की ओर मोड़ दें.

2. एक रोल को पेपर कटर की मदद से आधा काटें. अपने अंगूठे की मदद से ट्यूब यानी रोल के एक आधा भाग को बीच से दबाएं ताकि दिल का आकार बन सके.

3. रोल के चारों ओर एक रबरबैंड बांध दें ताकि दिल का आकार बना रहे.

4. रोल के दूसरे आधे भाग को अपनी उंगलियों से दबा कर तारे का आकार देने में इस्तेमाल करें.

5. कैंची का इस्तेमाल करें और रोल की परिधि के चारों ओर 6 चौड़ी पट्टियां काट लें, इसे बाहर की ओर मोड़ें और किनारों को गोलाकार रूप दे कर काट लें ताकि फूल बन सके.

6. स्टैंप्स बन कर अब तैयार हैं.

7. उन पर ऐक्रेलिक कलर लगा दें और खूबसूरत प्रिंट्स बनाएं.

अपने घर पर इसे स्वयं ही बनाने की कोशिश करें. हमें अपनी प्रविष्टि **writetochampak@delhipress.in** या एक फोटो खींच कर +91 9619587613 पर भेज दें.

दिशा बताएं

जानवरों के ऊपर एक वृत्ताकार घेरा बनाएं जिन के चेहरे का भाव दाईं ओर है और जिन जानवरों के चेहरे का भाव बाईं ओर है, उन्हें क्रौस कर दें. क्या आप किसी जानवर को देख रहे हैं जिस का चेहरा ऊपर या नीचे की ओर है? वे कितने हैं?

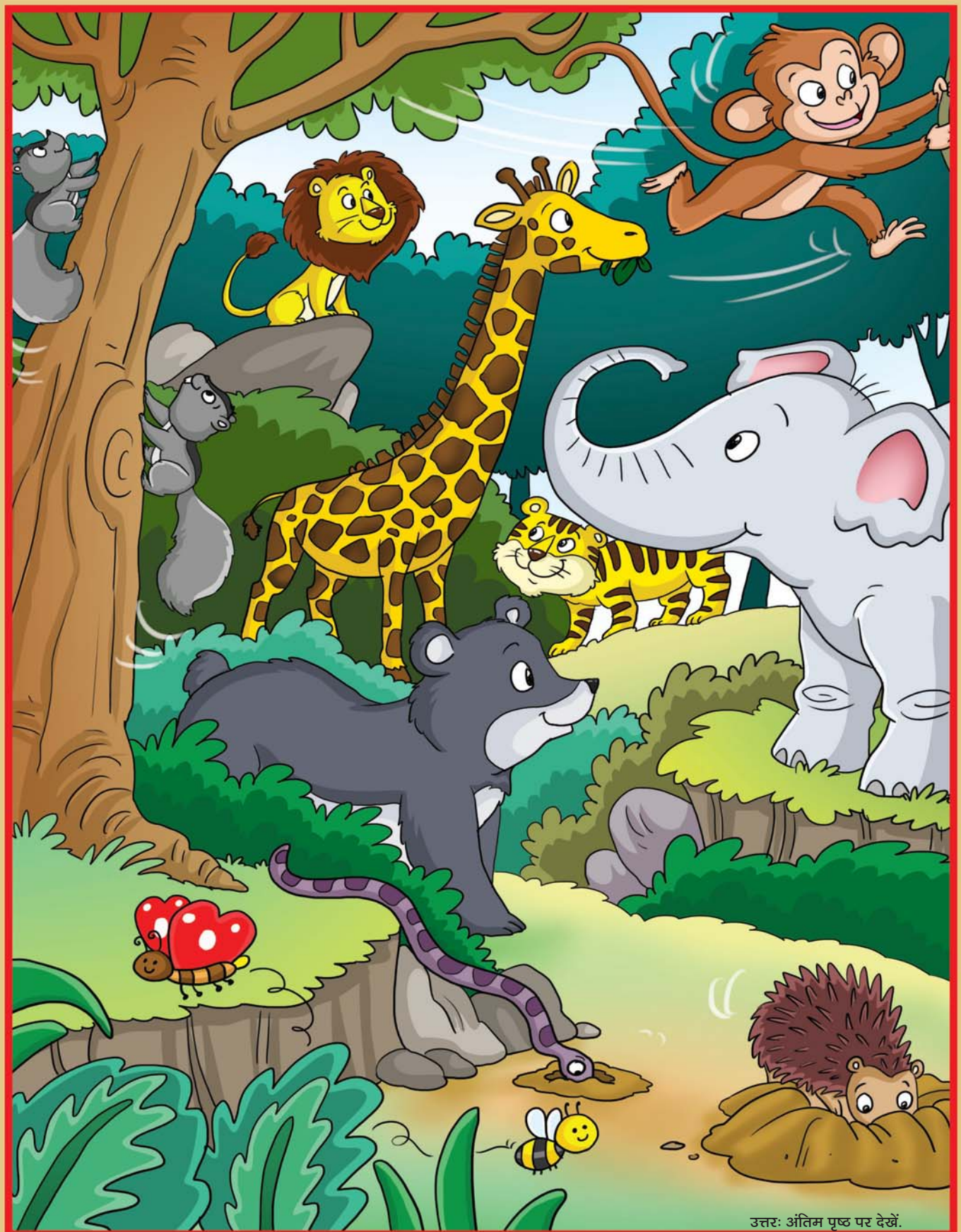

उत्तरः अंतिम पृष्ठ पर देखें.

आलसी

कहानी ● पूनम पांडे

मोनू के जागने का समय तो हो गया था मगर वह अपने आलस का कुछ कर ही नहीं पा रहा था. ‘‘ओह, यदि यह आलस मेरी जादुई ताकत बन जाता तो मेरा सब काम कर देता,’’ मोनू विश मांगता.

मोनू को कभी ऐसा सपना आता कि बस, उस ने आंखों से इशारा किया और उस का सारा काम आराम से पूरा हो गया, फिर चाहे वह स्कूल का होमवर्क ही क्यों न हो. मोनू अकसर यही चाहता था कि उस का यह सपना बस कैसे भी सच हो जाए.

‘‘वाह, क्या मजे होंगे, न हाथ हिलाना पड़ेगा और न ही पसीना बहाना होगा. मेरा कमरा और बाथरूम एकदम साफ होगा और डस्टबिन एकदम खाली होगा. मेरे कपड़े अलमारी के अंदर होंगे. स्कूल के लिए मेरा लंचबौक्स एकदम तैयार रखा हो, तो कितना अच्छा होता. बस, मन में सोचा और काम पूरा हो गया.’’

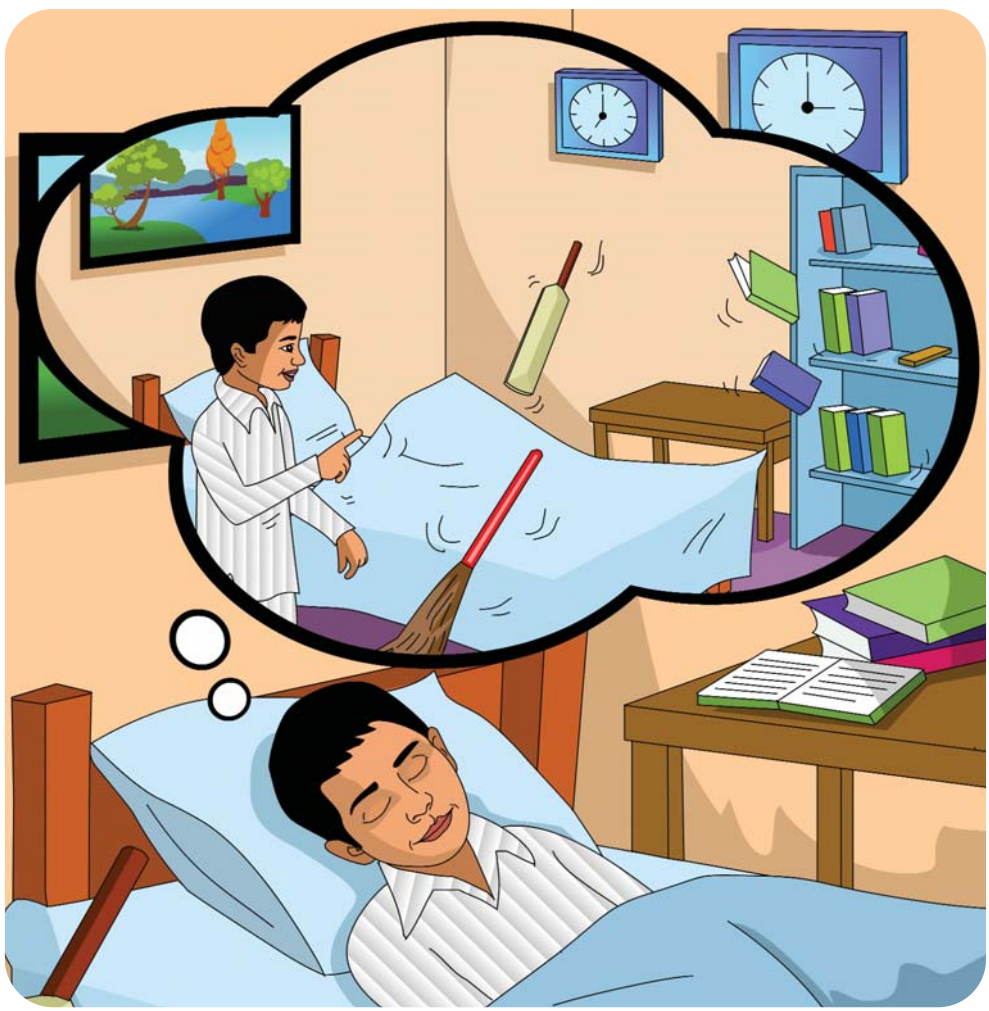

लेकिन मोनू की मां ने उस के इस खूबसूरत सपने को तोड़ दिया. आज भी उसे सुबहसुबह ही जगा दिया.

‘‘मां, इतनी भी जल्दी क्या है? मुझे अभी कुछ देर और सोना है,’’ कहते वह रोया.

लेकिन मां तब तक वहीं पर खड़ी रहीं, जब तक कि मोनू बिस्तर से उठ नहीं गया. उस ने सोचा कि मां तानाशाह हैं. ‘‘हद है, मैं तो मां का ही प्यारा बेटा हूं, ऐसा हमारी कविता की किताब में भी लिखा है,’’ लेकिन मां तो उस से कुछ न कुछ काम कराती ही रहती हैं.

आज भी वह अनमने मन से सब काम कर रहा था. अभी तक मां उस को 2 बार टोक चुकी थीं. पहले तो मां ने कहा, ‘‘वह लापरवाही करने लगा है फिर यह भी कहा कि आज उन को बुखार है और मोनू को अगर दूध में शक्कर कम महसूस हो रही है तो

खुद ही रसोई में जा कर डब्बे से चीनी निकालनी चाहिए.''

यह सुन कर मोनू ने फिर मुंह बना दिया. मगर वह ऐसे ही दूध गटक गया और बिस्कुट खा लिए. लेकिन मां ने फिर टोका तो उस को सेब भी खाना पडा.

मां ने बैग में टिफिन रख दिया था. घर से कुछ कदमों की दूरी पर ही स्कूल था. स्कूल पहुंचने में मुश्किल से 10 मिनट लगते थे. आज उस ने मां को बाय भी नहीं कहा और चल पड़ा. जैसे ही वह गेट पर पहुंचा उसे याद आया कि आज तो पहले ही पीरियड में ही एक प्रतियोगिता होने वाली है. वह अपने आलस में यह बात भी भूल गया था.

उसे याद आया कि उस ने कल रात एक कार्टून फिल्म देखी और बस उसी में खोया रहा. ''कितना अच्छा होता यदि स्कूल के सिलैबस में भी बस फिल्में ही होतीं और आज होने वाली निबंध प्रतियोगिता में कल वाली कार्टून फिल्म पर कुछ लिखने को दिया जाता तो मजा आ जाता,'' वह हमेशा की तरह सोचने लगा.

जैसे ही उस ने कक्षा में प्रवेश किया टीचर ने घोषणा की, ''सब को 30 मिनट का समय दिया जा रहा है, मां पर लगभग 300 शब्द लिखने हैं. अगर चाहो तो लंबी कविता भी लिख सकते हो. आज छुट्टी होने से पहले ही परिणाम बता दिए जाएंगे,'' ऐसा कह कर टीचर ने सब को खाली सीटें बांट दीं. सब लिखने लगे. लिखने की आवाज पूरी क्लास में आने लगी.

मोनू अभी कुछ नहीं लिख पा रहा था. वह आज बहुत ही गुस्से में था. अब उस ने अपने मन का गुस्सा और सारी भड़ास आंसर सीट्स पर निकाल दी.

उस ने लिखा कि मां घर पर हर समय और्डर देती हैं कि अपना कमरा साफ करो, खाना खा लिया तो अपनी थाली साफ करो, अपने जूते साफ रखो, खुद पालिश करो, रोज 5 गमलों में पानी दो, खाली समय में चित्र बनाओ, हर दिन व्यायाम करो, पैदल चलो. मां तो यह भी कहती हैं कि 5वीं कक्षा में हो तो अपने लिए चपाती सेंकना सीखो. मां सिर्फ और्डर देती हैं. इस तरह उस ने निबंध पूरा किया और आंसर सीट टीचर को दे दी.

लंच से पहले टीचर ने कक्षा में ही कुछ आंसर सीट

जांचीं. टीचर ने मोनू का निबंध पढ़ा तो वे चिंतित थे. सभी छात्रों ने अपनी मां की सराहना की थी, लेकिन मोनू नाराज था. टीचर ने मोनू को बुलाया और उस से पूछा, ‘‘तुम ने अपनी मां के बारे में ऐसी बातें क्यों लिखीं?’’

मोनू का चेहरा गुस्से से लाल हो गया, ‘‘क्योंकि वे हमेशा मुझे डांटती और आदेश देती हैं,’’ उस ने जवाब दिया.

‘‘हम्म... मैं चाहता हूं कि तुम अपनी मां के बारे में 5 बातें सोचो, जिन्हें तुम पसंद करते हो,’’ टीचर ने कहा.

मोनू ने लंबी सांस ली, कुछ देर सोचा और फिर अपना लंचबौक्स देखा. वह जानता था कि मां ने उस की पसंदीदा पावभाजी पैक की है. उस ने अपना टिफिन खोला तो पावभाजी की सुगंध पूरे क्लासरूम में फैल गई.

वह सोचने लगा, ‘मां की तबीयत खराब थी, लेकिन फिर भी उन्होंने सुबह उठ कर मेरी मनपसंद पावभाजी बना दी.’

‘‘टीचर, मेरी मां दयालु, देखभाल और प्यार करने वाली हैं. वे मेरा मनपसंद खाना बनाती हैं. हर शाम मुझे कहानियां पढ़ कर सुनाती हैं और मेरे साथ एक दोस्त की तरह रहती हैं. वे न केवल मुझे आदेश बल्कि एक विचार भी देती हैं. वे हर समय मेरी सहायता करती हैं. उन्होंने मुझे अपने जैसा स्वतंत्र रहना सिखाया,’’ उस ने कहा.

टीचर ने मुसकरा कर उसे थपथपाया और कहा, ‘‘रोना मत मोनू. अभी जाओ और अपना लंच करो. स्कूल के बाद तुम्हें मालूम है कि क्या करना है.’’

मोनू ने टीचर का धन्यवाद किया और अपने लंच को फिर से खाया. हमेशा की तरह आज की पावभाजी भी स्वादिष्ठ थी. वह अपने टीचर के साथ निबंध के बारे में सोचने लगा.

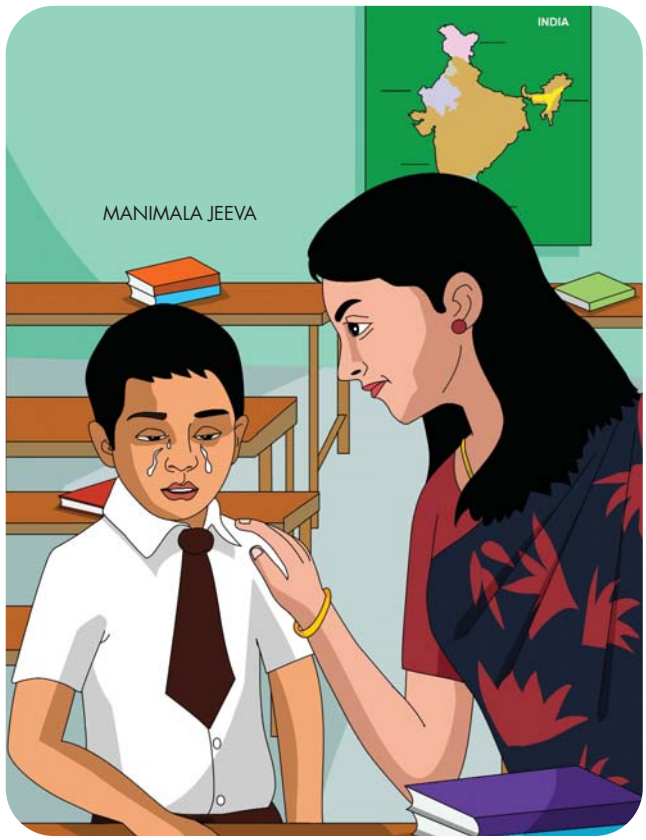

अंतिम पीरियड में निबंध प्रतियोगिता का रिजल्ट घोषित किया गया. उस की दोस्त करिश्मा को निबंध के लिए पुरस्कार मिला.

जब स्कूल से छुट्टी हुई तो मोनू ने अपना बैग बंद किया और एक कार्ड ले कर आया, जो उस ने मां के लिए बनाया था. जैसे ही वह घर पहुंचा, उस ने उसे उन्हें सौंपा और कहा, ‘‘मां, मुझे माफ कर दो.’’

मां ने उसे गले लगा लिया.

‘‘मां, आप आराम करो मैं आप के लिए अदरक वाली चाय बनाऊंगा. पापा, क्या आप मेरी मदद करेंगे?’’ उस ने पूछा.

पापा के साथ चाय बनाने के बाद उस ने अपने पेरैंट्स के साथ चाय का आनंद लिया. उस ने बहुत आराम महसूस किया. ●

अंतर बताओ

यहां 10 गलतियां हैं. आप उन गलतियों को ढूंढ़ कर बताएं.

हमारे और उन के बौद्धिक कार्य

मनुष्य बहुत से कार्य करने में समर्थ होते हैं और हमारी ही तरह औक्टोपस भी कई कार्य कर सकते हैं. वे औजारों का इस्तेमाल कर सकते हैं, उलझनों यानी भूलभुलैया का रास्ता ढूंढ़ सकते हैं. ऐसे मनुष्यों को पहचान सकते हैं, जो उन्हें खाना खिलाते हैं और एक मार्ग की योजना बनाने में लैंडमार्क्स यानी चिन्हों का इस्तेमाल करते हैं.

वैज्ञानिकों ने पाया कि औक्टोपस एक खास व्यक्तित्व के मालिक हैं और बुद्धिमान जीव हैं. उन्हें एस्केपिंग टैंक्स यानी वे टैंक्स से बचने के लिए जाने जाते हैं, क्योंकि वे इस से रेंग कर उस वक्त बाहर आ जाते हैं जब भीतर का पानी का लैवल कम होता है. यह सबकुछ उन के सोचने की क्षमता को दर्शाता है और मनुष्यों की तरह ही मूल्यांकन करने की योग्यता दिखाता है. जब उन्हें खतरे का एहसास होता है तो त्वचा के रंग और पैटर्न को बदलने के लिए भी जाना जाता है.

वैज्ञानिकों के अनुसार औक्टोपस के भी विभिन्न व्यक्तित्व हैं जैसा मनुष्य का होता है. हरेक औक्टोपस खास तरीके से अलगअलग व्यवहार करता है जबकि उस समय एक सामान्य ही अवस्था होता है. यानी एक खास अवस्था या समय में औक्टोपस अलगअलग तरीके से बरताव करता है.

चट्टानों से बनी गुफा में औक्टोपस अकेले रहते हैं. वे चट्टान का दरवाजा भी बनाते हैं जिसे खींच कर वे सुरक्षित गुफा के अंदर चले जाते हैं और उस समय बंद कर लेते हैं.

रास्ता बताओ

आल्टो ऐस्टोरायड (छुद्रग्रह) की उस के घर तक पहुंचने में मदद करें.

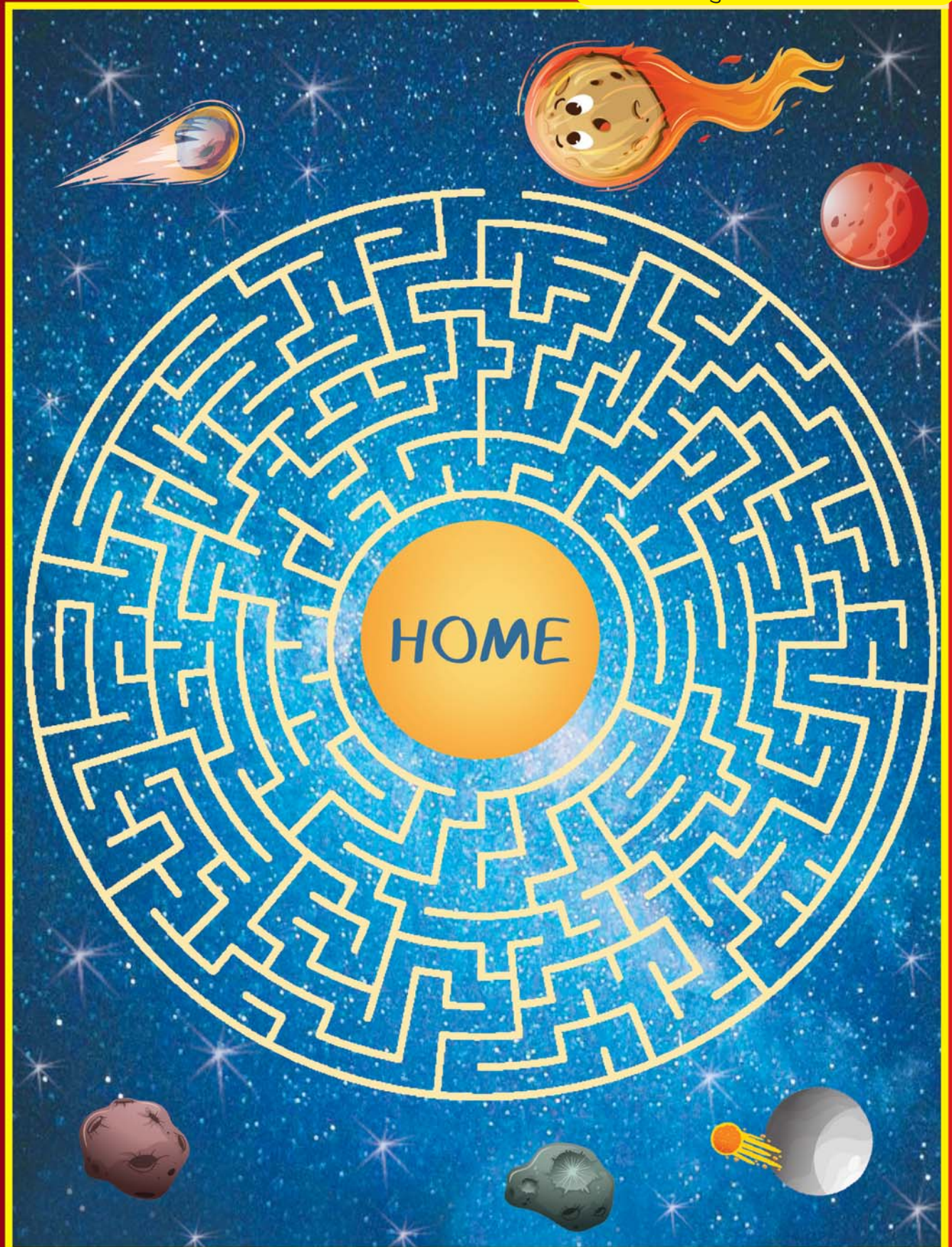

उत्तरः अंतिम पृष्ठ पर देखें.

दादाजी और विश्व टैलीविजन दिवस

कहानी ● विवेक चक्रवर्ती

राहुल और रिया आपस में बहस कर रहे थे.
टीवी औफ करो. मुझे पढ़ने में परेशानी हो रही है. तुम्हें भी पढ़ना चाहिए.
थोड़ी देर पहले तू भी टीवी देख रही थी.
मैं एजुकेशनल शो देख रही थी और तुम बेकार चीज देखने में समय बरबाद कर रहे हो.
अरे, मैं नहीं जानता कि वह कार्टून शो जिसे तू देख रही थी, शिक्षाप्रद था.
बच्चो, क्या बात है, तुम झगड़ क्यों रहे हो?
दादाजी, मैं इसे कह रही हूं कि टीवी बंद कर मुझे पढ़ाई करनी है, लेकिन यह मेरी बात नहीं सुन रहा.
दादाजी, रिया पहले टीवी देख रही थी और अब वह मुझे कह रही है कि मैं समय बरबाद कर रहा हूं. क्या टीवी देखना समय बरबाद करना है, दादाजी?
यह तो इस बात पर निर्भर करता है कि तुम क्या देख रहे हो.

मैं आप के कहने का मतलब नहीं समझ सकी, दादाजी.
टीवी पर बहुत सारे प्रोग्राम चल रहे होते हैं और यह तुम्हारा चुनाव होता है कि तुम्हें एजुकेशनल देखना है या ऐंटरटैनमेंट.
कभीकभी कोई शो हिंसा वाला होता है, जो बच्चों के लिए गलत है, क्योंकि इन्हें देखने से उन पर गलत प्रभाव पड़ सकता है. कुछ बच्चों को टीवी देखने की आदत जाती है और फिर वे अन्य कोई काम या ऐक्टिविटी नहीं करना चाहते, जोकि नुकसानदेह हो सकता है.
टीवी देखना इतना खराब है, दादाजी?
नहीं, ऐसा नहीं है. हम टीवी पर ज्ञानवर्द्धक चीजें भी देख सकते हैं.
टीवी को यूनैस्को ने एक सशक्त ज्ञानप्रद और संचार के साधन के रूप में मान्यता दी है. उस के महत्त्व के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने के लिए 21 नवंबर को वर्ल्ड टैलीविजन डे यानी टैलीविजन दिवस मनाया जाता है.
SONAL
लेकिन दादाजी, हम अभी भी नहीं समझ सके कि टीवी देखना अच्छा है कि खराब?
हर चीज के दो पक्ष होते हैं, अच्छा और बुरा. यह हम पर निर्भर करता है कि हम कौन से पक्ष को अपनाते हैं. हमें टीवी ऐंटरटैनमेंट और एजुकेशन के लिए देखना चाहिए और यह समझना चाहिए कि कब इसे बंद कर के अन्य कार्य करने हैं.
आप ने सही कहा, दादाजी.

नन्ही कलम से

योगिता, 10 वर्ष
दिल्ली

चैंपियन

कोई भी मेरी बात सुनना नहीं चाहता. मेरे सिर पर सूरज तप रहा है. लेकिन तुम मुझे नीचे गिरा नहीं सकते. मैं मुकुट की रानी हूं क्योंकि मैं एक चैंपियन हूं. मेरे खिलाफ दुश्मन जो कुछ भी कहता है, सिवा झूठ के कुछ भी नहीं है. मैं अपनी राह पर चलने जा रही हूं. सभी बाधाओं को पार करने जा रही हूं. असंभव कार्य भी मैं करूंगी, तुम अभी सिर्फ मेरी अनदेखी करोगे, लेकिन जब मैं तुम्हारे आंखों के सामने उठूंगी, जब तुम देखोगे कि मैं एक चैंपियन हूं. मेरा मुकुट सोने का बना है. तुम्हारी चिड़चिड़ाहट मेरे खिलाफ अब पुरानी हो जाएगी. मेरी पीठ पीछे मुझ पर हंसना बंद करो. मुझ में ऐसी कोई भी कमी नहीं है, जिस पर तुम हंसो मैं सब को गौरवान्वित करना चाहती हूं. जोर से मेरा नाम पुकारो. तुम अभी मुझे नजरअंदाज कर सकते हो और जब मैं तुम्हारी नजरों के सामने उठूंगी तब तुम देखोगे कि मैं एक चैंपियन हूं.

गीत कौर, 10 वर्ष
दिल्ली

आयरान्या राउत, 8 वर्ष, दिल्ली

प्रतिभाशाली की परिभाषा

जीनियस का मतलब है प्रतिभाशाली, जो कुशाग्र बुद्धि वाला होता है. वह हर समय मुसकराता रहता है. 99 प्रतिशत वह प्रेरणादायक होता है, सिर्फ एक प्रतिशत ही पसीना बहाता है. तुम्हें यह जरूर जानना चाहिए कि तुम चाहते क्या हो और कभी भी ऐसा कुछ नहीं है जो तुम्हें डराएगा. जो जीनियस होते हैं वह कुछ क्रेजी यानी सनकी होते हैं. वे थोड़ा कभी भी अपने सपनों को धूमिल होने नहीं देते. यह दिमाग का एक परिपूर्ण अवस्था जो तुम्हें उलझनों से मुक्त करा कर राहत पहुंचाने में मदद करता है. यह एक परिपूर्ण पैशन यानी मनोभाव है जो तुम्हारे चरित्र का एक फैशन बन जाता है. सिर्फ इस बात को चाहो जिसे तुम करना चाहते हो यानी तुम जो काम करना चाहते हो उस से प्यार करो और फिर तुम देखोगे कि तुम्हारे भीतर प्रतिभा का विकास हो रहा है.

अनुषा शुक्ला, 11 वर्ष, जबलपुर

अदिति रंजन, 6 वर्ष
पटना

ग्रीष्मा डी वशिष्ठ, 9 वर्ष
बैंगलुरु

अपर्णा मिश्रा, 13 वर्ष, जमशेदपुर

ईक्लासेस

ईक्लासेस बहुत आकर्षक होती हैं. मैं इन्हें बहुत पसंद करती हूं, लेकिन यह बहुत ज्यादा आसान भी नहीं है. हमेशा एक समस्या आ जाती, क्योंकि कंप्यूटर प्रोग्राम को लोड होने में समय लगता है और कभीकभी वह डिस्कनैक्ट भी हो जाती हूं. साथ ही कभीकभी मैं अपने टीचर को सुन नहीं पाती, उन्हें देख नहीं पाती हूं और कभीकभी मेरी टीचर का कनैक्शन बहुत ही कमजोर होता है. शोरगुल शुरू हो जाता है और सभी चिल्लाना शुरू कर देते हैं. जब हमारी टीचर अपनी स्क्रीन को शेयर करती हैं, तो कभीकभी कुछ और ही चीजें दिखने लगती हैं या घटने लगती हैं. लेकिन फिर भी ईक्लास के बारे में अच्छी बातें जो हैं, वे ये हैं कि मैं जब तक चाहूं, तब तक बैठे रह सकती हूं.

संस्कृति शर्मा, 10 वर्ष, जम्मू

मेरे पापा

जो मुझे हमेशा अपने कंधे पर बिठा कर चिड़ियाघर ले जाते हैं, हमेशा मुझे सही राह दिखाते हैं और कैसे खेलते हैं, यह बात सिखाते हैं, वे मेरे पापा हैं. जो मुझे सारी चीजें देते हैं, जिन्हें मैं चाहती हूं और कभी भी मुझे निराश नहीं करते हैं. वे मेरे पापा हैं. जो मेरे लिए रातदिन काम करते हैं, ताकि मेरा भविष्य बेहतर बन सके. वे मेरे पापा हैं. जो मुझे पढ़ना सिखाते हैं और साइकिल पर सवारी कराते हैं वे मेरे पापा हैं, जो मुझे आत्मीयता के बारे में बताते हैं क्योंकि वे जीवन की सचाइयों को जानते हैं, वे मेरे पापा हैं.

सक्षम पीयूष, 10 वर्ष
राजस्थान

यह पेपर रैबिट हैं जिन्हें हमारे 10 वर्षीय पाठक सुप्रवो शाहा ने दुर्गापुर से बना कर भेजा है.

अपनी पहेलियां, चुटकुले, चित्र या कहानी अपने नाम, उम्र, पता तथा फोन नं. के साथ लिखें:

चंपक, दिल्ली प्रैस, ए-4, श्रीराम इंडस्ट्रियल एस्टेट, वडाला, मुंबई- 400031

writetochampak@delhipress.in 9619587613

www.facebook.com/ChampakMagazine

http://www.youtube.com/ChampakSciQ

हम आप की सामग्री लौटा नहीं सकते इसलिए हमें भेजी सामग्री की कापी अपने पास रखें.

गलत को बताएं

इस चित्र में कुछ बातें ऐसी हैं जो सही नहीं हैं, उन्हें ढूंढ़ें.

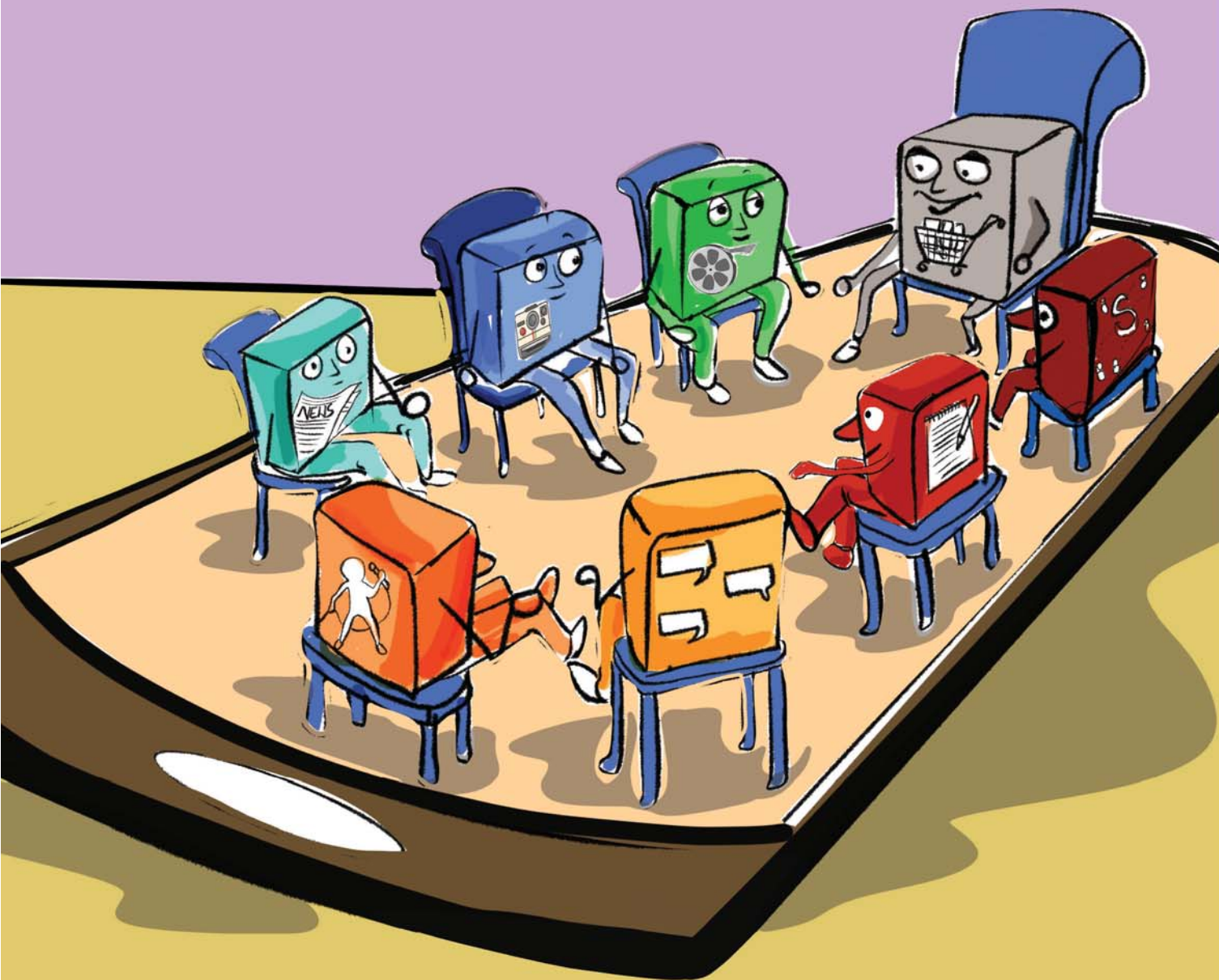

ऐप्स का घमासान

कहानी ● निखिल अग्रवाल

गुल्लू को अपनी कक्षा में पहला स्थान प्राप्त हुआ और उस के पेरैंट्स ने उसे एक नया मोबाइल उपहार में दिया. मोबाइल की चमचमाती बड़ी स्क्रीन पर सबकुछ एकदम शीशे की तरह साफ दिखता था. जैसे ही गुल्लू को मोबाइल मिला, उस ने उस में सभी तरह के ऐप्स डाउनलोड कर लिए. उस ने दोस्तों से बात करने और पूरे दिन गेम्स खेलने के लिए अपने मोबाइल का इस्तेमाल किया. रात को भी वह मोबाइल अपने पास ही रख कर सो गया, मानो वह कोई मुलायम सा टैडीबियर हो.

जैसे ही गुल्लू गहरी नींद में सोया, अचानक उस के मोबाइल में कुछ हलचल होने लगी. कुछ फुसफुसाने की सी आवाजें आने लगीं. उस के मोबाइल में प्लेस्टोर ने सभी नए ऐप्स की बैठक बुलाई थी. अब नयानया मोबाइल था और प्लेस्टोर तो सब से पहले मोबाइल में डला हुआ आता है, सो सब की खबर लेने की जिम्मेदारी उसी की थी. सारे ऐप्स उसी के द्वारा डाले जाते थे. कोई उस का विरोध भी नहीं करता था. सब उसे दादाजी कह कर बुलाते थे.

अब इन ऐप्स के मन में यही कंपीटिशन था कि कौन सब से बेहतर है. जैसे ही बैठक शुरू हुई प्लेस्टोर ने बोलना शुरू किया, ''इस में कोई शक नहीं कि मैं ही मोबाइल में सब से अच्छा ऐप हूं, क्योंकि सब से पहले फोन में मैं ही डला हुआ आता हूं. मेरे बिना मोबाइल में कोई भी नहीं आ सकता,'' यह सुनते ही सभी ऐप हंसने लगे.

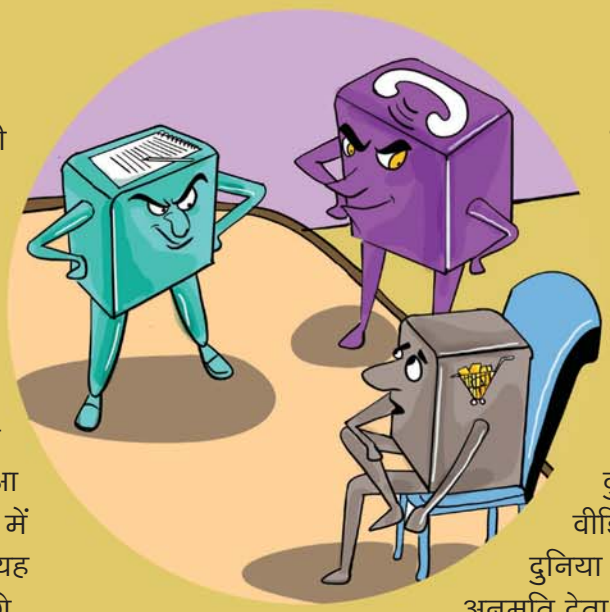

''दादाजी, आप यहां सब से बड़े हो तो इस का मतलब यह नहीं कि हमारी अनदेखी कर दोगे,'' एमएमएस ऐप ने कहा.

डायलर ऐप भी आगे आया और बोला, ''हम दोनों भी फोन में पहले से इंस्टौल होते हैं. वह पीछे जो कैलकुलेटर ऐप पड़ा हुआ सो रहा है, वह भी प्रीलोडेड आता है, बल्कि हम तो पुराने मोबाइल के जमाने से आते हैं. तुम कहां से श्रेष्ठ हो गए दादाजी?'' सब ने इस टिप्पणी पर खूब ठहाके लगाए.

''मेरे बिना किसी को मैसेज और डायलर के बिना किसी से बात कर के दिखाओ, तो मैं जानूं,'' एसएमएस ने चुनौती दी.

''अब समय बदल गया है दीदी, हम नई पीढ़ी के हैं,'' व्हाटसेप बोला, ''आप के दोनों काम मैं अकेले ही कर सकता हूं, कौल भी और बात भी, वह भी मुफ्त में.''

''तब क्या होता है जब इंटरनैट काम करना बंद कर देता है? तब हम ही तो काम आते हैं. तुम तो कंबल में मुंह छिपा लेते हो,'' एसएमएस तिलमिलाया.

''लेकिन बिना नैटवर्क के आप काम नहीं कर सकते. कम से कम कहीं वाईफाई हो तो मैं चल जाता हूं,'' व्हाटसेप झेंप कर बोला.

''आप एक तरफ जा सकते हैं,'' इंस्टाग्राम ने अपनी रौबदार अंदाज में कहा और आगे आया. ''गुल्लू अपना ज्यादा समय मेरे इस्तेमाल में ही बिताता है. मैं उस की दोस्तों से बात करने में मदद करता हूं और दुनियाभर की तसवीरें, वीडियोज और ज्ञान से भरी दुनिया को नेविगेट करने की अनुमति देता हूं.''

''इसे समय बिताना नहीं बल्कि समय बरबाद करना कहते हैं,'' व्हाटसेप तुनका.

''हांहां, बिलकुल,'' इंस्टाग्राम ने व्यंग्य में कहा, ''तभी तो तुम ने और फेसबुक ने मेरी स्टोरी वाली सुविधा चुराई,'' व्हाट्सऐप झेंप गया. फेसबुक ने मौन रहने में ही अपनी भलाई समझी.

लाल प्ले बटन यूट्यूब बोला, ''हां, मैं सहमत हूं, ज्ञान कम और फालतू के मीम में उस का समय बरबाद होता है. मुझ पर गुल्लू केवल सिर्फ अपना ज्ञान बढ़ाने आता है. फिजिक्स और कैमिस्ट्री के

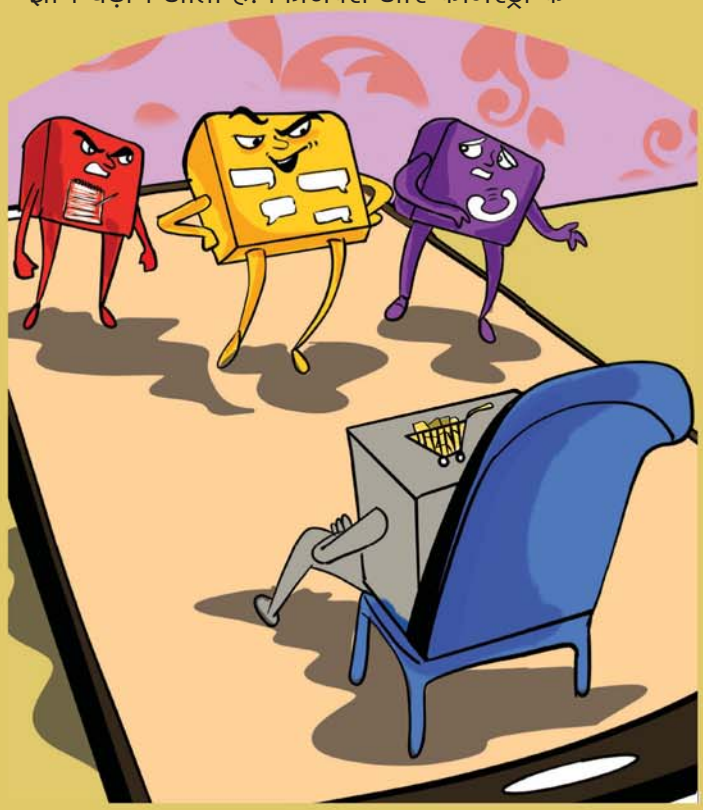

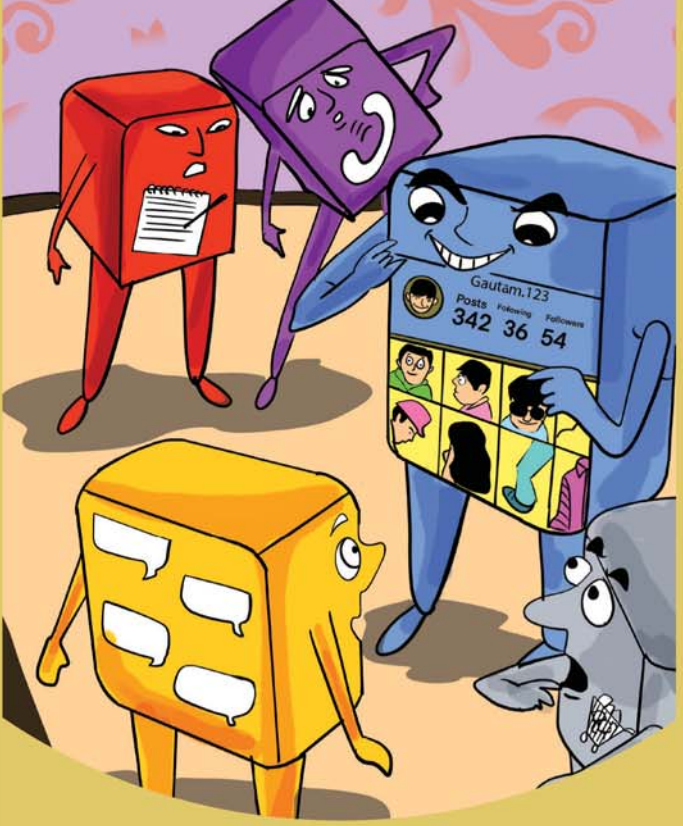

सिद्धांतों को वह मेरे वीडियोज से ही समझ पाता है. तुम्हारे पास फालतू मीम्स के अलावा है क्या?''

''हाहाहा,'' इंस्टाग्राम ने व्यंग्य भरे ठहाके लगाए, छोटे मीम पर 10 मिनट के वीडियोज से ले कर आधे घंटे का वीडियो कार्टून बनने में समय नहीं लगता. समय तो तुम भी उतना ही बरबाद करवाते हो,'' इस तर्क पर अन्य सभी ऐप हंसे.

प्लेस्टोर बोला, ''मैं पूछ सकता हूं कि तुम दोनों को कैसे पता कि गुल्लू किस ऐप में क्या करता है. इस की जानकारी तुम को कैसे मिली?''

व्हाट्सऐप और इंस्टाग्राम दोनों को पता था कि वे मुश्किल में हैं. जैसे ही इंस्टाग्राम ने प्लेस्टेशन की जांच की तो नजर उन पर पड़ी और उन्होंने कहा, ''दादाजी, यह सब तो मुझे टिकटौक ने बताया,'' यह सुनते ही यूट्यूब दुखी हो गया और बोला, ''उस ने आप को बताया?. उस ने मुझ से वादा किया था कि मैं किसी को नहीं बताऊंगा.''

''हां, ये इंस्टाग्राम की मीम्स वाली बात तो लगभग सभी को पता है. मुझे तो यह भी पता है कि व्हाट्सऐप पर कल गुल्लू ने रिंकू से एक घंटे बात की फिर यूट्यूब पर छोटा भीम देखा.''

''अच्छा, तो यह बात है,'' प्लेस्टोर बोला, ''यह टिकटौक इधर की बातें उधर करता है. यह बिलकुल ठीक नहीं. गूल्लू की निजता पर इस से खतरा हो सकता है. हमें उसे समझाना होगा.''

वे टिकटौक की खोज कर ही रहे थे कि तभी खबरों वाले ऐप ने उन का रास्ता रोका, ''कोई जरूरत नहीं,'' वह बोला.

''क्यों नहीं? हमें उसे समझाना तो पड़ेगा,'' व्हाट्सऐप बोला.

''मैं ने उसे फोन से निकाल दिया है. अब वह यहां कभी अपना मुंह नहीं दिखाएगा,'' सभी ऐप चौंक गए. न्यूज ऐप जारी रहा, ''चौंकने की जरूरत नहीं है. मुझे उस की गतिविधियों पर शक था. इस बैठक से ठीक पहले टिकटौक को मैं ने चोरीछिपे वैब

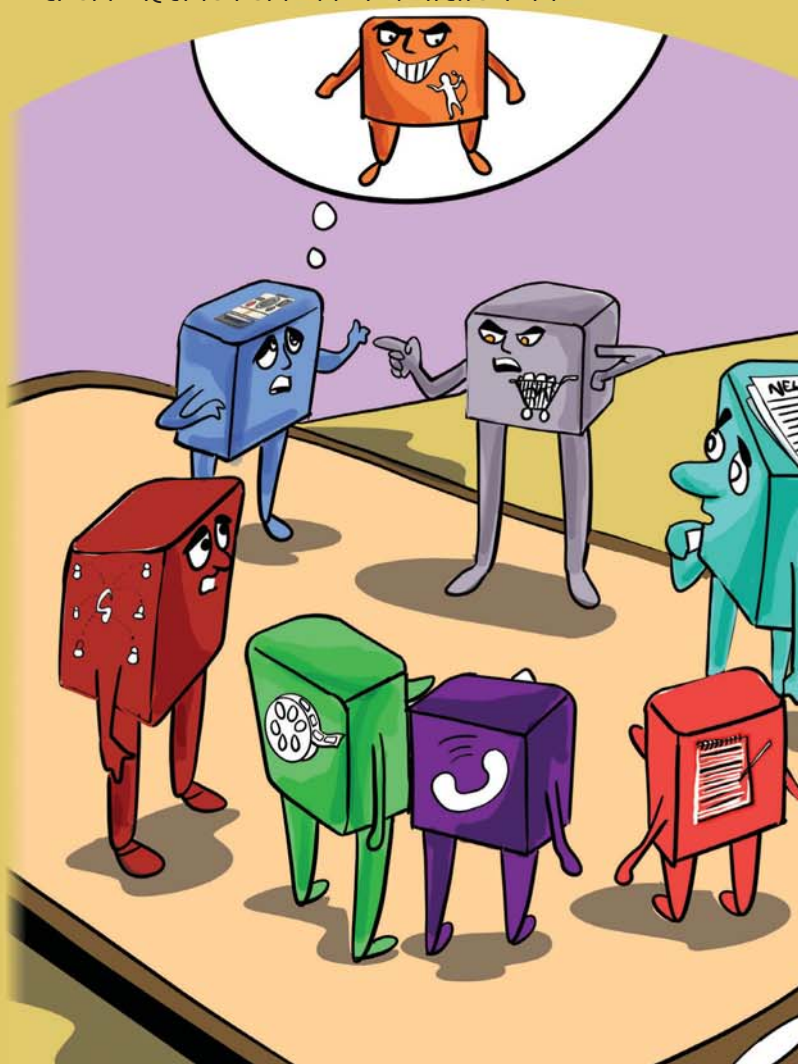

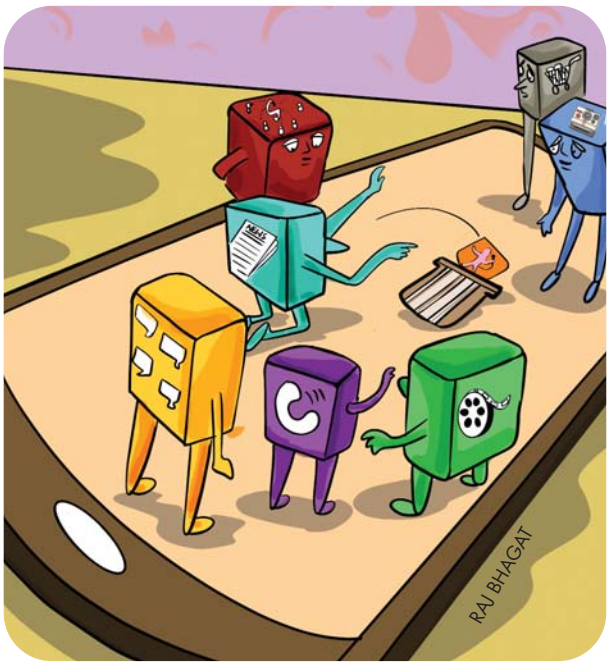

ब्राउजर से गुल्लू का पासवर्ड चुराते हुए देखा था. तब मेरा शक यकीन में बदल गया, जब यह खबर मिली कि इसी कारण उस को और उस के साथी ऐप्स को देशभर के मोबाइलों से हटा दिया गया है. तभी मैं ने उसे जाने के लिए कह दिया. अब दादा चाह कर भी उसे वापस नहीं ला सकते.''

सभी ऐप्स ने राहत की सांस ली, लेकिन अभी भी किसी को यह बात पच नहीं रही थी, क्योंकि टिकटौक एक बहुत ही दोस्ताना ऐप था और सभी को पसंद था.

अंत में प्लेस्टोर बोला, ''गलती टिकटौक की नहीं है. गलती उस को बनाने वाले की है, उस की नीयत की है. ऐसा काम करने का कोड उस ने अपनेआप से थोड़ी डाला होगा. वह तो बस, गुल्लू के मनोरंजन का साधन था. हम ऐप्स का तो सिर्फ एक ही लक्ष्य होना चाहिए. गुल्लू की निजता की सुरक्षा और उस के जीवन को और आसान बनाना ही हमारी जिम्मेदारी है,'' सभी ऐप ने अपनी सहमति अपने नोटिफिकेशन वाली आवाजें दे कर जताईं.

जल्द ही सुबह हो गई थी. सभी ऐप्स अपनीअपनी जगह वापस सेट हो गए और दोबारा एक दिन के लिए तैयार हो गए. ●

उत्तर पृष्ठ :

पृष्ठ 18 : अपने अधिकार जानें :

देर रात में तक बाहर रहने का अधिकार.
पर्यावरण साफ रखने का अधिकार.
जंकफूड खाने का अधिकार.
शिक्षा प्राप्ति का अधिकार.
भाषण देने का अधिकार.
उद्दंडता करने का अधिकार.
समानता का अधिकार.
उचित चिकित्सा प्राप्त करने का अधिकार.
सुनने का अधिकार.

पृष्ठ 23 : विश्व शौचालय दिवस :

सीमा शौच करने के बाद शौचालय के फ्लश को चला देती है.
राहुल खुले में पेशाब करता है.
अदिति शौचालय का इस्तेमाल करने के बाद अपने हाथ धोती है.
चंचल काफी टौयलेट पेपर का इस्तेमाल करती है.
समीर सार्वजनिक शौचालय का इस्तेमाल करता है, लेकिन उसे साफ नहीं रखता है.
साहिल टौयलेट पेपर का इस्तेमाल करने के बाद उसे फर्श पर फेंक देता है.
जब अजय सार्वजनिक शौचालय में जाता है वह अपनी लाइन कर आगे चला जाता है.
श्रेया शौच कर लेने के बाद अपने हाथ साबुन से नहीं धोती है.
शौचालय को हंसिका इस्तेमाल करने के बाद साफ रखती है.

पृष्ठ 33 : छिपे चित्र ढूंढ़ें :

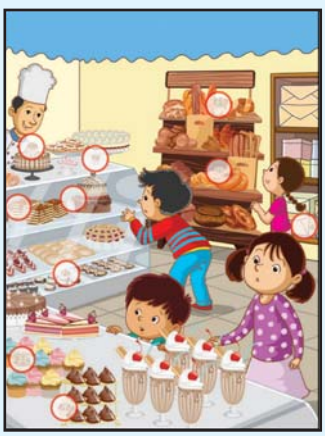

पृष्ठ 41 : रास्ता बताओ :

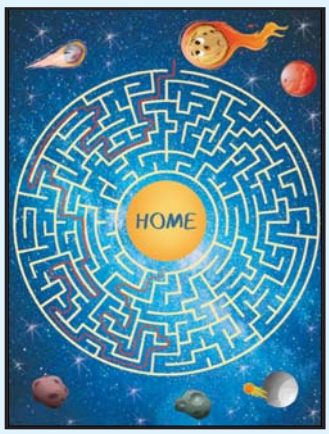

WE SPEAK IN 30 DIFFERENT CONSUMER VOICES.

BECAUSE EVERY BRAND IS UNIQUE.

With virtually every age group, income segment and language covering 30 million Indians, we are the most diverse magazine group in India. So next time you want to address anyone in India, you are better off speaking to the **Delhi Press** Group today.

DELHI PRESS

To subscribe to our magazines Call/SMS/WhatsApp: 08588843408,
E-mail: subscription@delhipress.in, You can also subscribe online at www.delhipress.in/subscribe

THE CARAVAN · CHAMPAK · सरिता · गृहशोभा · चंपक · मुक्ता · सरस सलिल · फार्मफूड · सत्यकथा · मनोहर कहानियां
ગૃહશોભા · ચંપક · सरस सलिल · गृहशोभा · चंपक · सरस सलिल · गृहशोभा · ಕೊಲ್ಲಾ · சம்பக் · சரல் · గృహశోభ · ചിപ്പി
ಗೃಹಶೋಭಾ · ಗೃಹಶೋಭ · ചന്ദ്രിക · सलिल · చందమామ · Highlights CHAMPS · Highlights Genies · MOTORING WORLD

(REGISTERED) RNI 16420/68 DL(C)-14/1093/2018-20
WPP U(C)148/40/2018-20 P.O. SRT Nagar, ND-55
Posting Dt. 16 to 22 Published on 12/11/2020. Pgs. 52.

SUNCARE

A WHO GMP COMPANY
SURE SAFE SECURE

स्वास्थ्य का रखे ख्याल जीवन रहे खुशहाल

Delicious Orange Taste

HAEMOCAL*

Delicious Taste

Iron Tonic Loaded with Glucose

- भूख न लगना • अनीमिया (शरीर में खून की कमी)
- त्वचा का सफेद दिखना • जीभ, नाखूनो के अंदर सफेदी।
- कमजोरी एवं बहुत अधिक थकावट
- सांस फूलना व हृदयगति का तेज होना।

उपरोक्त लक्षणों में तुरंत इस्तेमाल में लीजिए

हेमोकॉल आपके शरीर में खून की कमी को दूर करता है, इसका ओरेंज फ्लेवर काफी स्वादिष्ट है। इसमे आयरन व फोलिक ऐसिड का भंडार है जो कि कमजोरी को आपकी जिंदगी से बाहर कर देता है। पहली खुराक से ही फायदा मिलेगा

एसिडीटी, पेट फूलना, गैस, बदहजमी,
पेट दर्द, ढीला पैखाना, डायरिया, कब्ज,
उल्टी, आँव, मितली, हिचकी इत्यादी !

उपरोक्त लक्षणों में तुरंत इस्तेमाल में लीजिए

STOMAFIT®

Tablets & Liquid

फायदा पहली खुराक से ही

2 चम्मच/2 टैबलेट दिन में
3 बार खाने के बाद आधा कप
पानी के साथ 4 हफ्तो तक

Instant Relief from Indigestion & Acidity

रखे स्टमक फिट...
पेट फिट...आप फिट...

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:

सनकेयर फार्मूलेशन्स प्रा. लि.

फोन:8447977889/999, 011-46108735, मेल:info@stomafit.com

फ्री होम डिलीवरी 8447977999

Now Available on 1mg